पश्चाताप

जैसे कोई भी बन्धन से मुक्त होते वैसे ही सहज रीति शरीर के बन्धन से मुक्त हो सकें। नहीं तो शरीर के बन्धन से भी बड़ा मुश्किल मुक्त होंगे।

फाइनल पेपर है—अन्त मती सो गति।

अन्त में सहज रीति शरीर के भान से मुक्त हो जायें - यह है पास विद ऑनर की निशानी। लेकिन वह तब हो सकेगी जब अपना चोला टाइट नहीं होगा। अगर टाइटनेस होगी तो सहज मुक्त नहीं हो सकेंगे। टाइटनेस का अर्थ है कोई से लगाव। इसलिए अब यही सिर्फ एक बात चेक करो - ऐसा लूज चोला हुआ है जो एक सेकेण्ड में इस चोले को छोड़ सकें?

20.12.1969

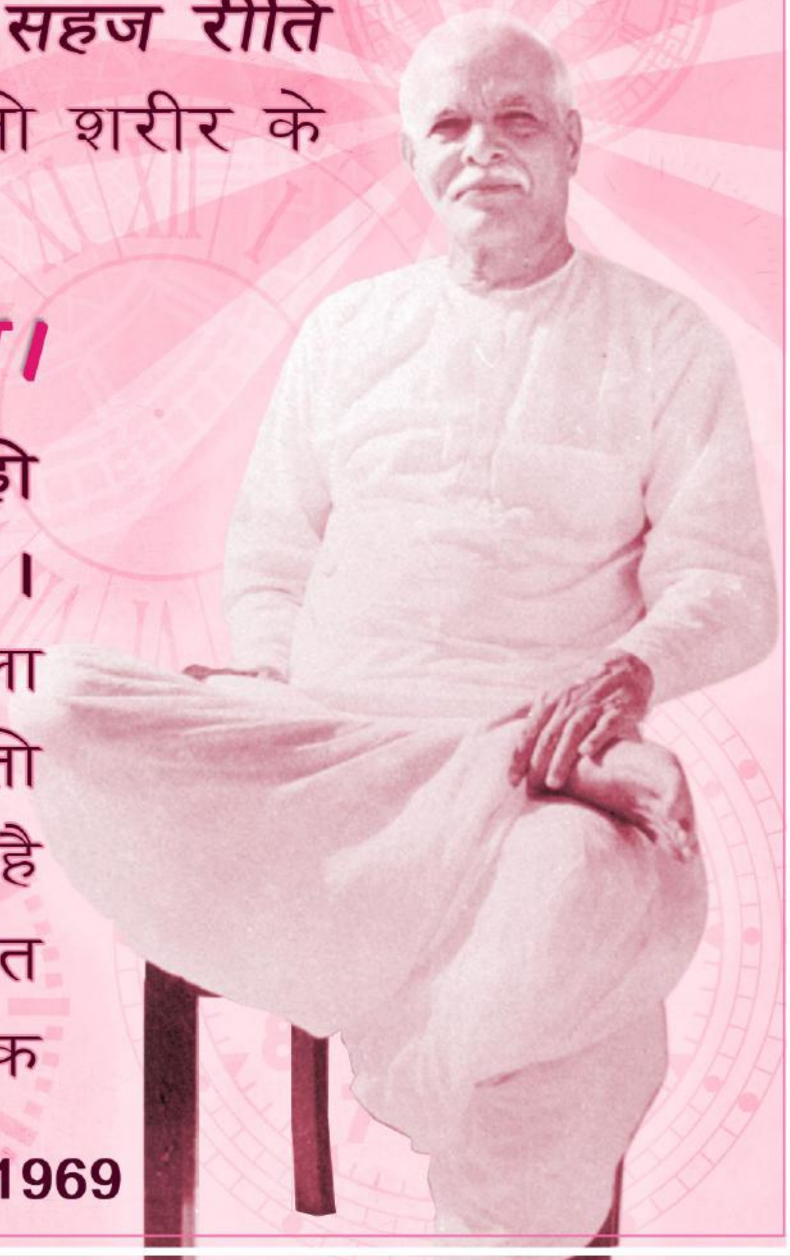

पश्चाताप

अगर कहाँ भी अटका हुआ होगा तो निकलने में भी अटक होगी। इसी को ही एवररेडी कहा जाता है। ऐसे एवररेडी वही होंगे जो हर बात में एवररेडी होंगे। *प्रैक्टिकल में देखा ना – एक सेकेण्ड के बुलावे पर एवररेडी रह दिखाया। यह सोचा क्या कि बच्चे क्या कहेंगे? बच्चों से बिगर मिले कैसे जावें – यह सोचा? एलान निकला और एवररेडी।*

चोले से इजी होने से चोला छोड़ना भी इजी होता है, इसलिए यह कोशिश हर वक्त करनी चाहिए।

यही संगमयुग का गायन होगा कि कैसे रहते हुए भी न्यारे थे, तब ही एक सेकेण्ड में न्यारे हो गये। बहुत समय से न्यारे रहने वाले एक सेकेण्ड में न्यारे हो जायेंगे।

20-12-1969

पश्चाताप

बहुत समय से न्यारापन नहीं होगा तो यही शरीर का प्यार पश्चाताप में लायेगा। इसलिए इससे भी प्यारा नहीं बनना है। इससे जितना न्यारा होंगे उतना ही विश्व का प्यारा बनेंगे। इसलिए अब यही पुरुषार्थ करना है। ऐसे नहीं समझना है कि कोई व्याधि आदि का रूप देखने में आयेगा तब जायेंगे, उस समय अपने को ठीक कर देंगे। ऐसी कोई बात नहीं है।

20.12.1969

एक सेकेण्ड में अपने को अपने सम्पूर्ण निशाने और नशे में स्थित कर सकते हो? सम्पूर्ण निशाना क्या है, उसको तो जानते हो ना। जब सम्पूर्ण निशाने पर स्थित हो जाते हैं,तो नशा तो रहता ही है।

अगर निशाने पर बुद्धि नहीं टिकती तो नशा भी नहीं रहेगा। निशाने पर स्थित होने की निशानी है—नशा। तो ऐसा नशा सदैव रहता है?

05.02.1972

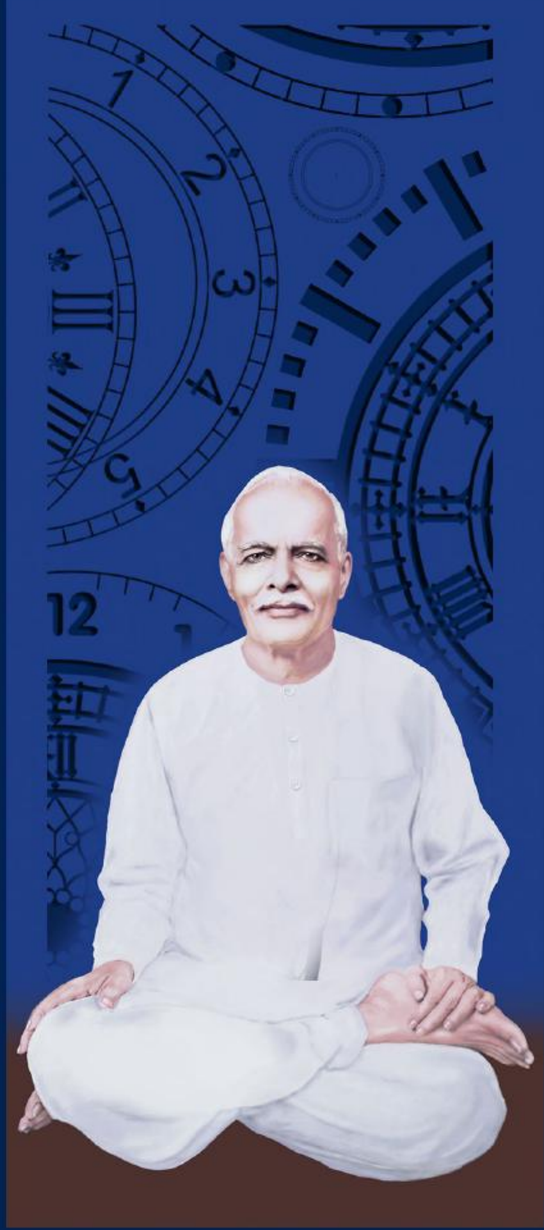

पश्चाताप

जो स्वयं नशे में रहते हैं वह दूसरों को भी नशे में टिका सकते हैं। जैसे कोई हद का नशा पीते हैं तो उनकी चलन से, उनके नैन-चैन से कोई भी जान लेता है- इसने नशा पिया हुआ है।

इसी प्रकार यह जो सभी से श्रेष्ठ नशा है, जिसको ईश्वरीय नशा कहा जाता है, इसी में स्थित रहने वाला भी दूर से दिखाई तो देगा ना। दूर से ही वह अवस्था इतना महसूस करे -यह कोई ईश्वरीय लगन में रहने वाली आत्मायें हैं। ऐसे अपने को महसूस करते हो ?

आप कहां भी आते जाते हो तो लोग देखने से ही समझे कि यह कोई प्रभु की प्यारी न्यारी आत्मायें हैं। ऐसे अनुभव करते हैं?

05.02.1972

पश्चाताप

05.02.1972

भक्ति–मार्ग में भी ऐसी आत्मायें होती हैं। उन्हों के नैन–चौन से प्रभ–प्रेमी देखने आते हैं तो ऐसी स्थिति इसी दुनिया में रहते हुए, ऐसी कारोबार में चलते हुए समझते हो कि यह अवस्था रहेगी या सिर्फ लास्ट में दर्शन–मूर्त की यह स्टेज होगी?

क्या समझते हो- क्या अन्त तक साधारण रूप ही रहेगा वा यह झलक चेहरों से दिखाई देगा? वा सिर्फ लास्ट टाइम जैसे पर्दे के अन्दर तैयार हो फिर पर्दा खुलता है और सीन सामने आकर समाप्त हो जाती है, ऐसे होगा? कुछ समय यह झलक दिखाई देगी। कई ऐसे समझते हैं कि जब फर्स्ट, सेकेण्ड आत्मायें जो निमत्त बनी वही साधारण गुप्त रूप अपना साकार रूप का पार्ट समाप्त कर चले गये तो हम लोग की झलक फिर क्या दिखाई देगी? लेकिन नहीं।

पश्चाताप

सन शोज फादर गाया हुआ है। तो फादर का शो बच्चे प्रैक्टिकल में लाने से ही करेंगे।

अहो प्रभु की पुकार जो आत्माओं की निकलेगी वा पश्चाताप की लहर जो आत्माओं में आयेगी वह कब, कैसे आयेगी? जिन्होंने साकार में अनुभव ही नहीं किया उन्हों को भी बाप के परिचय से कि हम बाबा के बच्चे हैं। यह तब मानेंगे कि बरोबर बाप आये लेकिन हम लोगों ने कुछ नहीं पाया?

05.02.1972

तो यह प्रैक्टिकल रुहानी झलक और फरिश्तेपन की फलक चेहरे से, चलन से दिखाई दे।

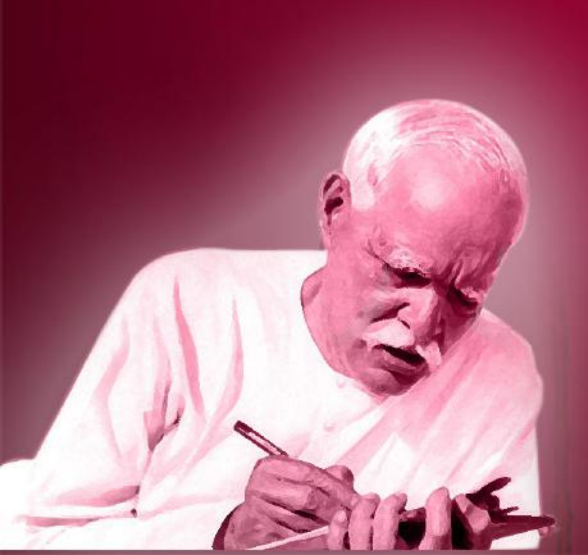

पश्चाताप

पराई चीज तो आयेगी भी और जायेगी भी।

परिस्थिति माया की है, अपनी नहीं है। अपनी चीज को खोना नहीं होता है। तो खुशी को खोना नहीं।

खुशी से शरीर भी जायेगा तो बढ़िया मिलेगा। पुराना जायेगा नया मिलेगा।

11.11.1989

अभी तक आप ब्राह्मण-आत्मायें अपने तन-मन की मेहनत से प्रोग्राम्स बनाते हो, स्टेज तैयार करते हो, निमंत्रण कार्ड छपाते हो, कोई वी.आई.पी. को बुलाते हो, रेडियो, टी.वी. वालों को सहायेगी बनाते हो, धन भी लगाते हो। लेकिन आगे चल आप स्वयं वी.आई.पी. हो जायेंगे।

18.01.1990

पश्चाताप

वह साकार में बाप का कर्तव्य था, प्रैक्टिकल में बच्चों का कर्तव्य है प्रख्यात होने का और

बाप का कर्तव्य है बैकबोन बनने का, गुप्त रुप में मददगार बनने का।

इसलिए ऐसे भी नहीं कि जैसे मात-पिता का गुप्त पार्ट चला वैसे ही अन्त तक गुप्त वातावरण रहेगा। **जयजयकार शक्तियों की गाई हुई है और अहो प्रभु की पुकार बाप के लिए गाई हुई है।** आप लोग आपस में भी एक दो के अनुभव करते होंगे - जब विशेष अटेन्शन अपने निशाने वा नशा का रहता है, तो भल कितने भी बड़े संगठन में बैठे होंगे तो भी सभी को विशेष कुछ दिखाई जरुर देगा।

05.02.1972

पश्चाताप

महसूस करेंगे कि यह समय याद में बहुत अच्छा बैठे। अभी जो साधारण अटेन्शन है वह बदलकर नैचुरल विशेष अटेन्शन हो जायेगा और चेहरे से झलक–फलक दिखाई देगी।

सिर्फ स्मृति को शक्तिशाली बनाना है।

05-02-1972

वर्तमान समय भोलेपन के कारण माया का गोला ज्यादा लग रहा है। **ऐसा शक्ति स्वरुप बनना है जो माया सामना करने के पहले ही नमस्कार कर ले, सामना कर न पावे।** बहुत सावधान, खबरदार–होशियार रहना है। अपनी वृति और वायुमण्डल को चेक करो। अपने आपको देखो कि कोई भी वायुमण्डल अपनी वृति को कमजोर तो नहीं करता है?

10-05-1972

पश्चाताप

कैसा भी वायुमण्डल हो लेकिन स्वयं की शक्तिशाली वृति वायुमण्डल को परिवर्तन में ला सकती है। अगर वायुमण्डल का वृति के ऊपर असर आ जाता है तो यही भोलापन है। ऐसे भी नहीं सोचना चाहिए कि मैं तो ठीक हूँ लेकिन वायुमण्डल का असर आ गया। नहीं।

कैसा भी वायुमण्डल विकारी हो लेकिन स्वयं की वृति निर्विकारी होनी चाहिए।

जब कहती हो–हम पतित–पावनियां हैं, पतितों को पावन बनाने वाली हैं, जब आत्माओं को पावन बना सकती हो तो क्या वायुमण्डल को पतित से पावन नहीं बना सकती? पावन बनाने वाले वायुमण्डल के वशीभूत नहीं होते।

लेकिन वायुमण्डल वृति के ऊपर प्रभाव डाल देता है, यह है कमजोरी।

10.05.1972

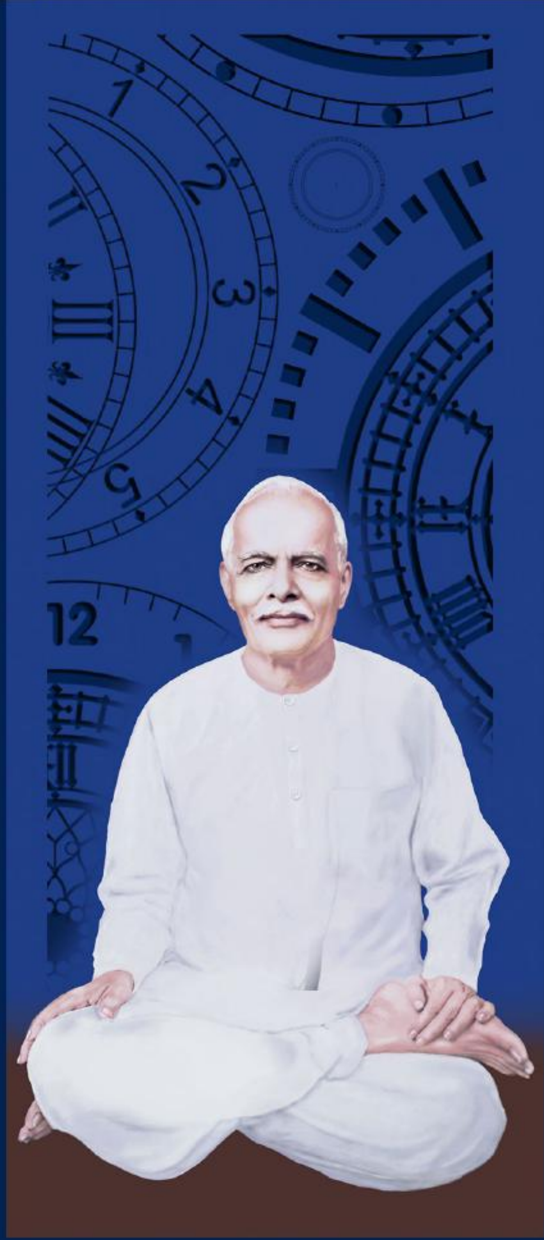

पश्चाताप

हरेक को ऐसा समझना चाहिए कि मुझे स्वयं अपने पावरफुल वृत्ति से जो भी अपवित्र वा कमजोरी का वायुमण्डल है उसको मिटाना है। तुम मिटाने वाले हो, न कि वश होने वाले। कोई पतित वायुमण्डल का वर्णन भी नहीं करना चाहिए।

वर्णन किया तो जैसे कहावत है ना -पाप को देखने वाले पर भी पाप होता है। अगर कोई भी कमजोर वा पतित वायुमण्डल का वर्णन भी करते हैं तो यह भी पाप है। क्योंकि उस समय बाप को भूल जाते हैं। जहां बाप भूल जाता है वहां पाप जरूर होता है। ***बाप की याद होगी तो पाप नहीं हो सकता। इसलिए वर्णन भी नहीं करना चाहिए।***

10.05.1972

पश्चाताप

10.05.1972

जबकि बाप का फरमान है तो मुख से सिवाए ज्ञान रत्नों के और कोई एक शब्द भी व्यर्थ नहीं निकलना चाहिए। वायुमण्डल का वर्णन करना–यह भी व्यर्थ हुआ ना। जहां व्यर्थ है वहां समर्थ की स्मृति नहीं।

समर्थ की स्मृति में रहते हुए कोई भी बोल बोलेंगे तो व्यर्थ नहीं बोलेंगे, ज्ञान–रत्न ही बोलेंगे। तो वृति को, बोल को भी चेक करो। कई ऐसे भी समझते हैं कि कर्म कर लिया, पचाताप कर लिया, माफी मांग ली, छुट्टी हो गई। लेकिन नहीं। कितनी भी को माफी ले लेवे लेकिन जो कोई पाप कर्म वा व्यर्थ कर्म भी हुआ तो उसका निशान मिटता नहीं। निशान पड़ ही जाता है। रजिस्टर साफ स्वच्छ नहीं होता।

इसलिए ऐसे भी नहीं कहना कि हो गया, माफी ले ली। इस रीति रसम को भी नहीं अपनाना।

पश्चाताप

अपना कर्तव्य है-संकल्प में, वृति में, स्मृति में भी कोई पाप का संकल्प न आये, इसको ही कहा जाता है ब्राह्मण अर्थात् पवित्र।

अगर कोई भी अपवित्रता वृति, स्मृति वा संकल्प में है तो ब्राह्मण-पन की स्थिति में स्थित हो नहीं सकते, सिर्फ कहलाने मात्र हो। इसलिए कदम-कदम पर सावधान रहो।

10.05.1972

हर कर्म करने के पहले मास्टर त्रिकालदर्शी बनकर कर्म नहीं करते हो।

अगर मास्टर त्रिकालदर्शी बन हर कर्म, हर संकल्प करो वा वचन बोलो, तो बताओ कब भी कोई कर्म व्यर्थ वा अनर्थ वाला हो सकता है?

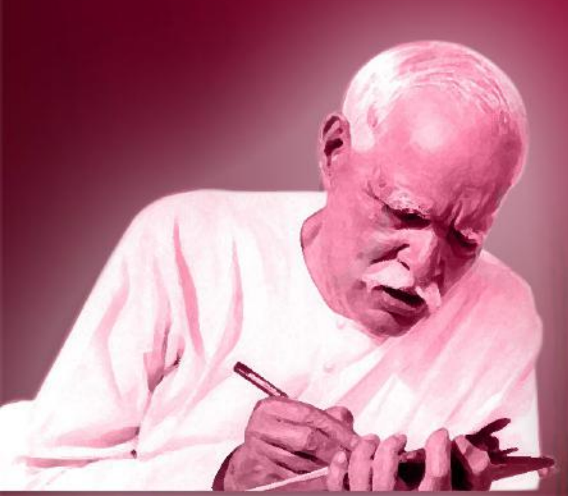

20.05.1972

पश्चाताप

कर्म करने के समय कर्म के वश हो जाते हो। **त्रिकालदर्शी अर्थात् साक्षी-पन की स्थिति में स्थित होकर इन कर्म-इन्द्रियों द्वारा कर्म नहीं करते हो, इसलिए वशीभूत हो जाते हो। वशीभूत होना अर्थात् भूतों का आहवान करना।** कर्म करने के बाद पश्चाताप होता है। लेकिन उससे क्या हुआ? कर्म की गति वा कर्म का फल तो बन गया

तो कर्म और कर्म के फल के बन्धन में फंसने के कारण कर्म-बन्धनी आत्मा अपनी ऊंची स्टेज को पा नहीं सकती है।

20.05.1972

पश्चाताप

तो सदैव यह चौक करो कि आये हैं कर्मबन्धनों से मुक्त होने के लिए लेकिन मुक्त होते-होते कर्मबन्धन-युक्त तो नहीं हो जाते हो?

ज्ञानस्वरुप होने के बाद वा मास्टर नालेजफुल, मास्टर सर्वशक्तिवान होने के बाद अगर कोई ऐसा कर्म जो युक्तियुक्त नहीं है, वह कर लेते हो तो इस कर्म का बन्धन अज्ञान काल के कर्मबन्धन से पदमगुणा ज्यादा है।

इस कारण बन्धन-युक्त आत्मा स्वतन्त्र न होने कारण जो चाहे वह नहीं कर पाती। महसूस करते है कि यह न होना चाहिए, यह होना चाहिए, यह मिट जाए, खुशी का अनुभव हो जाए, हल्कापन आ जाए, सन्तुष्टता का अनुभव हो जाए, सर्विस सक्सेसफुल हो जाए वा दैवी परिवार के समीप और स्नेही बन जाएं।

20.05.1972

पश्चाताप

अपने को महावीर समझते हो ना। महावीर कभी भी किसी मजबूरी को मजबूरी नहीं समझेंगे। *एक सेकेण्ड में मजबूती के आधार से मजबूरी को समाप्त कर देते हैं।*

ऐसे अंगद समान अपने बुद्धि रूपी पांव को एक बाप की याद में स्थित करना है, जो कोई भी हिला न सके।

कल्प पहले भी ऐसे ही बने थे ना, याद आता है? जब कल्प पहले ऐसे बने थे, तो वही पार्ट रिपीट करने में क्या मुश्किल है? अनेक बार किये हुये पार्ट को रिपीट करना मुश्किल होता है? तो **आप बहुत बहुत पदम भाग्यशाली हो। इतने सारे विश्व के अन्दर बाप को जानने और अपना जन्म-सिद्ध अधिकार प्राप्त करने वाले कितने थोड़े हैं?**

19-09-1972

पश्चाताप

अनगिनत नहीं हैं, गिनती वाले हैं। उन थोड़े जानने वालों में आप हो ना। तो पदमापदम भाग्यशाली नहीं हुए? अभी तो दुनिया अज्ञान की नींद में सोई है और आप अनेकों में से थोड़ी–सी आत्माएं बाप के वर्से के अधिकारी बन रहे हो। जब वह सभी जाग जावेंगे कोशिश करेंगे कि हम भी कुछ कणा–दाना ले जावें, लेकिन क्या होगा? ले सकेंगे? जब लेट हो जावेंगे तो क्या ले पावेंगे?

उस समय आप सभी आत्माओं को भी अपने श्रेष्ठ भाग्य का प्रत्यक्ष रुप में साक्षात्कार होगा। अभी तो गुप्त है ना।

अभी गुप्त में न बाप को जानते हैं, न आप श्रेष्ठ आत्माओं को जानते हैं। साधारण समझते हैं फिर भी पा न सकेंगे।

19.09.1972

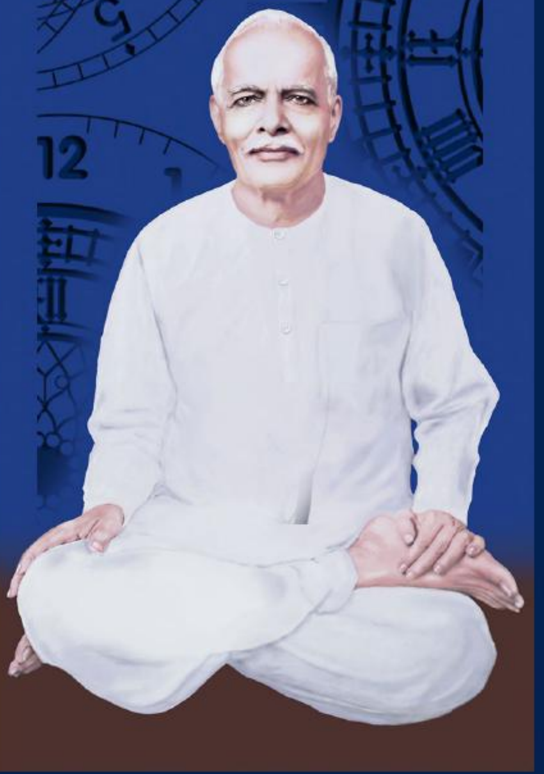

पश्चाताप

बताओ, उस समय आपको अपने ऊपर कितना नाज होगा कि हम तो पहले से ही पहचान कर अधिकारी बन गये हैं। ऐसी खुशी में रहना चाहिए।

क्या मिला है, कौन मिला है और फिर क्या-क्या होने वाला है। यह सभी जानते हुए सदैव अतिइन्द्रिय सुख में झूमते रहना है।

ऐसी अवस्था है कि कभीकभी पेपर्स हिला देते हैं? हिलते तो नहीं हो? घबराते तो नहीं हो? कि एक दो से सुनकर घबराने की लहर आती है, फिर अपने को ठीक कर देते हो? रिजल्ट क्या समझते हो?

19.09.1972

पश्चाताप

19.04.1973

श्रेष्ठ रंग में रहने वालों का रुहानी रंग भी सभी को दिखाई देना चाहिए। कोई भी देखे तो उनको यह मालूम हो कि यह रुहानी रंग में रंगी हुई आत्माएँ हैं।

ऐसे सभी को मालूम होता है या अभी गुप्त हो? यह रुहानी रंग गुप्त ही रहना है क्या? प्रत्यक्ष कब होना है? क्या अन्त में प्रत्यक्ष होंगे? वह डेट कौन–सी होगी? अन्त की डेट सभी की प्रत्यक्षता के आधार पर है।

ड्रामा प्लैन अनुसार आप श्रेष्ठ आत्माओं के साथ पश्चाताप का सम्बन्ध है। जब तक पश्चाताप न किया है तब तक मुक्तिधाम जाने का वर्सा भी नहीं पा सकते।

इसीलिए जो निमित बनी हुई हैं उन से ही तो पूछेगे ना?

पश्चाताप

निमित कौन है? आप सभी हो ना?
अभी अपने ही आगे अपने सम्पूर्ण स्टेज प्रत्यक्ष नहीं है तो औरों के आगे कैसे प्रत्यक्ष होंगे? क्या अपनी सम्पूर्ण स्टेज आप को श्रेष्ठ दिखाई देती है वह हाथ उठाओ।
वास्तव में सम्पूर्ण स्टेज तो नॉलेज से सभी जानते हैं। लेकिन अपने-आप को क्या समझते हो?

समीप के हिसाब से उस समान बनेंगे ना? तो अपनी सम्पूर्ण स्टेज दिखाई देती है?

19.04.1973

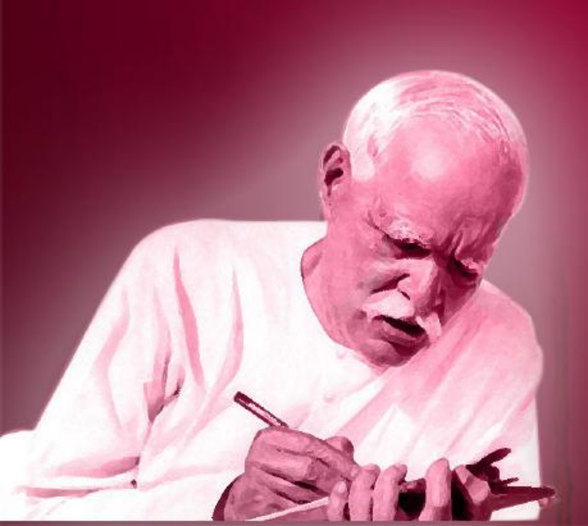

जस्टिस के आगे चाहे कितना भी स्नेही सम्बन्धी हो लेकिन लॉ इज लॉ।

30.05.1973

पश्चाताप

अभी लव का समय है फिर लॉ का समय होगा। फिर उस समय लिफ्ट नहीं मिल सकेगी।

अभी है प्राप्ति का समय और फिर थोड़े समय के बाद प्राप्ति का बदल पश्चाताप का समय आयेगा। तो क्या उस समय जागेगे?

बाप-दादा फिर भी सभी बच्चों को कहेंगे कि थोड़े समय में बहुत समय की प्राप्लब्ध बना लो। **समय के इन्तजार में अलबेले न बनो।**

सदैव यह स्मृति में रखो कि हमारा हर कर्म चौरासी जन्मों के रिकॉर्ड भरने का आधार है।

30.05.1973

पश्चाताप

अभी रिजल्ट आउट होने का समय आ रहा है, तो **रिजल्ट आउट होने से पहले कम्पलेन्ट्स को कम्पलीट करो।** अपनी कम्प्लेन्ट भी आप स्वयं ही करते हो। अमृतवेले से अपनी कम्पलेन्ट करते हो।

जब तक अपनी कम्पलेन्टस है, तब तक कम्पलीट नहीं हो सकेंगे। इसलिये स्वयं ही मास्टर सर्वशक्तिवान् बन अपनी कम्पलेन्ट को कम्पलीट करो।

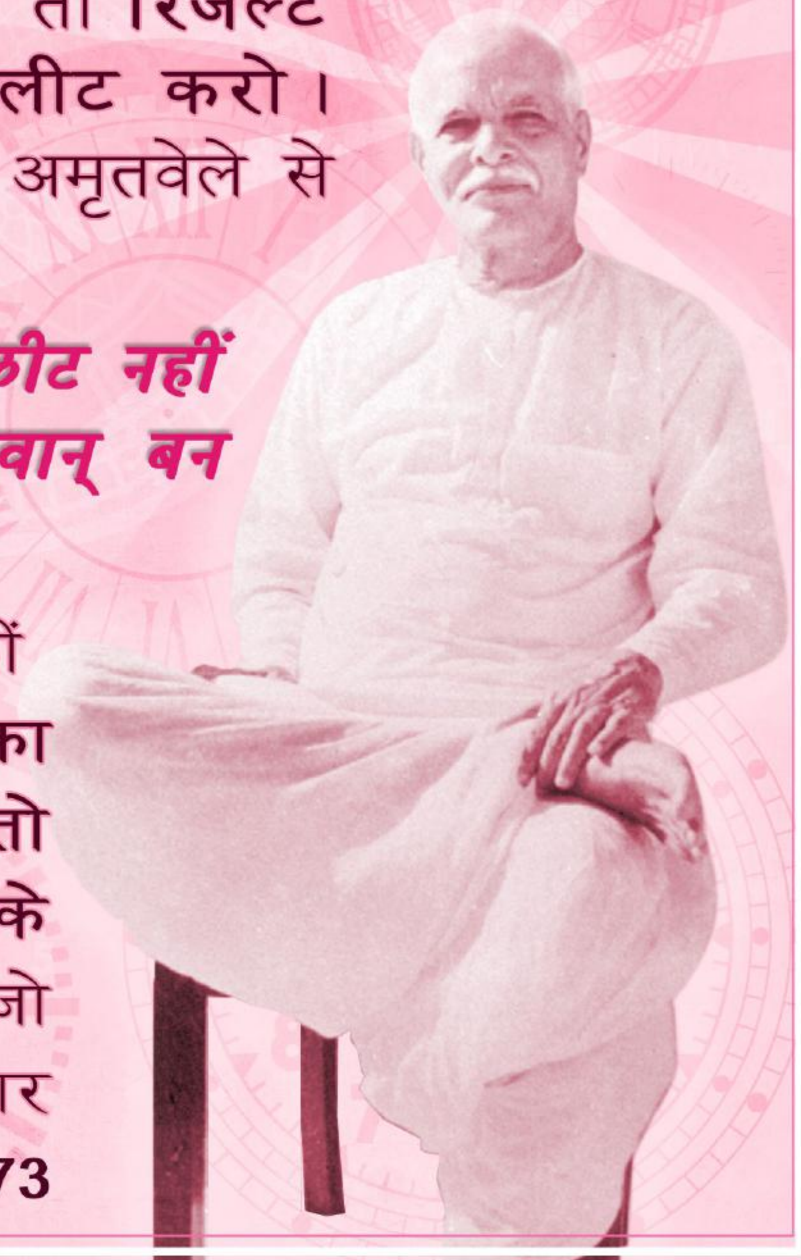

अभी फिर भी लास्ट चान्स का समय है। फिर नहीं तो टू लेट का बोर्ड लग जायेगा। **अभी प्राप्ति का समय भी –बहुत गई, थोड़ी रही है – नहीं तो पश्चाताप का समय आ जायेगा फिर पश्चाताप के समय प्राप्ति नहीं कर सकेंगे।** इसलिये अभी जो थोड़ी रही हुई है, यह चान्स भी चाहे किसी प्रकार का चान्स तो है ना?

21.07.1973

पश्चाताप

तो चान्स को गंवाना वा लेना, अपने प्रयत्न से आप जो चाहो वह कर सकते हो। इसलिये अभी से रिवाइज करो। यह तो सुना दिया कि जब रिवाइज करो व जज करो तो किस रूप में करना है। विधि तो सुना ही दी है।

क्योंकि विधि–पूर्वक करने से सिध्दि की प्राप्ति तो हो ही जायेगी।

21-07-1973

कोई भी देहधारी में संकल्प से व कर्म से फंसना, इस विकारी देह रूपी साँप को टच करना अर्थात् अपनी की हुई अब तक की कमाई को खत्म करना है।

26-10-1975

पश्चाताप

चाहे कितना भी ज्ञान का अनुभव हो या याद द्वारा शक्तियों की प्राप्ति का अनुभव किया हो या तन–मन–धन से सेवा की हो, लेकिन **सर्व प्राप्तियाँ इस देह रूपी साँप को टच करने से इस साँप के विष के कारण, जैसे विष मनुष्य को खत्म कर देता है, वैसे ही यह साँप भी अर्थात् देह में फंसने का विष सारी कमाई को खत्म कर देता है। पहले की हुई कमाई के रजिस्टर पर काला दाग पड़ जाता है जिसको मिटाना बहुत मुश्किल है।**

जैसे योग–अग्नि पिछले पापों को भस्म करती है वैसे यह विकारी भोग भोगने की अग्नि पिछले पुण्य को भस्म कर देती है। इसको साधारण बात नहीं समझना।

यह पाँचवीं मंजिल से गिरने की बात है। कई बच्चे अब तक अलबेलेपन के संस्कार–वश इस बात को कड़ी भूल व पाप कर्म नहीं समझते हैं।

26.10.1975

पश्चाताप

वर्णन भी ऐसा साधारण रूप में करते हैं कि मेरे से चार पाँच बार यह हो गया, आगे नहीं करूंगा। वर्णन करते समय भी पश्चाताप का रूप नहीं होता, जैसे साधारण समाचार सुना रहे हैं। अन्दर में लक्ष्य रहता है कि यह तो होता ही है मंजिल तो बहुत ऊँची है, अभी यह कैसे होगा?

लेकिन फिर भी आज ऐसे पाप आत्मा, ज्ञान की ग्लानि कराने वालों को बाप-दादा वार्निंग देते हैं कि आज से भी इस गलती को कड़ी भूल समझकर यदि मिटाया नहीं तो बहुत कड़ी सजा के अधिकारी बनेंगे। बार-बार अवज्ञा के बोझ से ऊँची स्थिति तक पहुँच नहीं सकेंगे।

26.10.1975

पश्चाताप

26.10.1975

प्राप्ति करने वालों की लाइन के बजाय पश्चाताप करने वालों की लाइन में खड़े होंगे। प्राप्ति करने वालों की जयजयकार होगी और अवज्ञा करने वालों के नैन और मुख हाय हाय का आवाज निकालेंगे और सर्व प्राप्ति करने वाले ब्राह्मण ऐसी आत्माओं को कुलकलंकित की लाइन में देखेंगे। अपने किये विकर्मों का कालापन चेहरे से स्पष्ट दिखाई देगा।

इसलिये अब से यह विकराल भूल अर्थात् बडी-से-बडी भूल समझकर के अभी ही अपनी पिछली भूलों का पश्चाताप दिल से करके बाप से स्पष्ट कर अपना बोझ मिटाओ।

अपने आप को कड़ी सजा दो ताकि आगे की सजाओं से भी छूट जायें। **अगर अब भी बाप से छुपावेंगे व अपने को सच्चा सिद्ध करके चलाने की कोशिश करेंगे तो अभी चलाना अर्थात् अन्त में और अब भी अपने मन में की अनुभूति नहीं होती।**

पश्चाताप

ऐसे से अब भी चिल्लायेंगे और अन्त में हाय मेरा भाग्य कह चिल्लायेंगे। तो अब का चलाना अर्थात् बा. र-बार चिल्लाना। **अगर अभी बात को चलाते हो तो अपने जन्म-जन्मान्तर के श्रेष्ठ तकदीर को जलाते हो।** इसलिये इस विशेष बात पर विशेष अटेन्शन रखो।

संकल्प में भी इस विष-भरे साँप को टच नहीं करना। संकल्प में भी टच करना अर्थात् अपने को मूर्छित करना है।

26.10.1975

तो रजिस्टर में विशेष अलबेलापन देखा। दूसरी रिजल्ट कल सुनाई थी कि किन-किन बातों में चढ़ती कला के बजाय रुक जाते हैं। तीव्र गति के बजाय मध्यम गति हो जाती है। यह है मैजॉरटी का रिजल्ट।

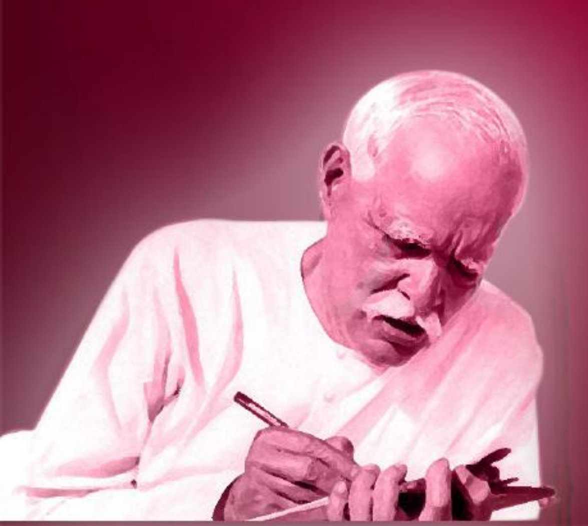

पश्चाताप

इसलिये अब अपने आप को रियलाइज करो अर्थात् अन्तिम रियलाइज कोर्स समाप्त करो। अपने आप को अच्छी तरह हर प्रकार से हर सब्जेक्ट में चेक करो। **सर्व मर्यादाओं को, बाप के फरमानों को और श्रेष्ठ-मत को कहाँ तक प्रैक्टिकल में लाया है, उसको चेक करो और साथ साथ मधुबन महायज्ञ में** सदाकाल के लिये अन्तिम आहुति डालो। समझा?

अभी बाप के प्रेम-स्वरूप का उल्टा एडवान्टेज नहीं उठाओ नहीं तो अन्तिम महाकाल रूप के आगे एक भूल का हजार गुणा पश्चाताप करना पड़ेगा।

26.10.1975

पश्चाताप

ज्ञान का खजाना समय की पहचान के कारण अब नहीं तो कब नहीं दे सकते। अब देंगे तो भविष्य में अनेक जन्म प्राप्त होगा। इस आधार पर समय के महत्व के कारण सदा विश्व-सेवाधारी बनने से सेवा का प्रत्यक्ष फल खुशी का खजाना अखुट बन जाता है।

श्वासों का खजाना, समय के महत्व प्रमाण एक का पद्म गुणा या बनने के वरदान का समय समझने से अर्थात् कर्म और फल की गुह्य गति समझने से, व्यर्थ श्वासों को सफल बनाने की सदा स्मृति रहने से, श्रेष्ठ कर्मों का खाता वा श्रेष्ठ कर्मों का सूक्ष्म संस्कार रूप में बना हुआ खजाना स्वत: ही भरता जाता है।

तो सर्व खजानों के जमा का आधार समय के श्रेष्ठ खजानों को सफल करोश तो सदा और सर्व सफलता मूर्त सहज बन जाएंगे।

23.04.1977

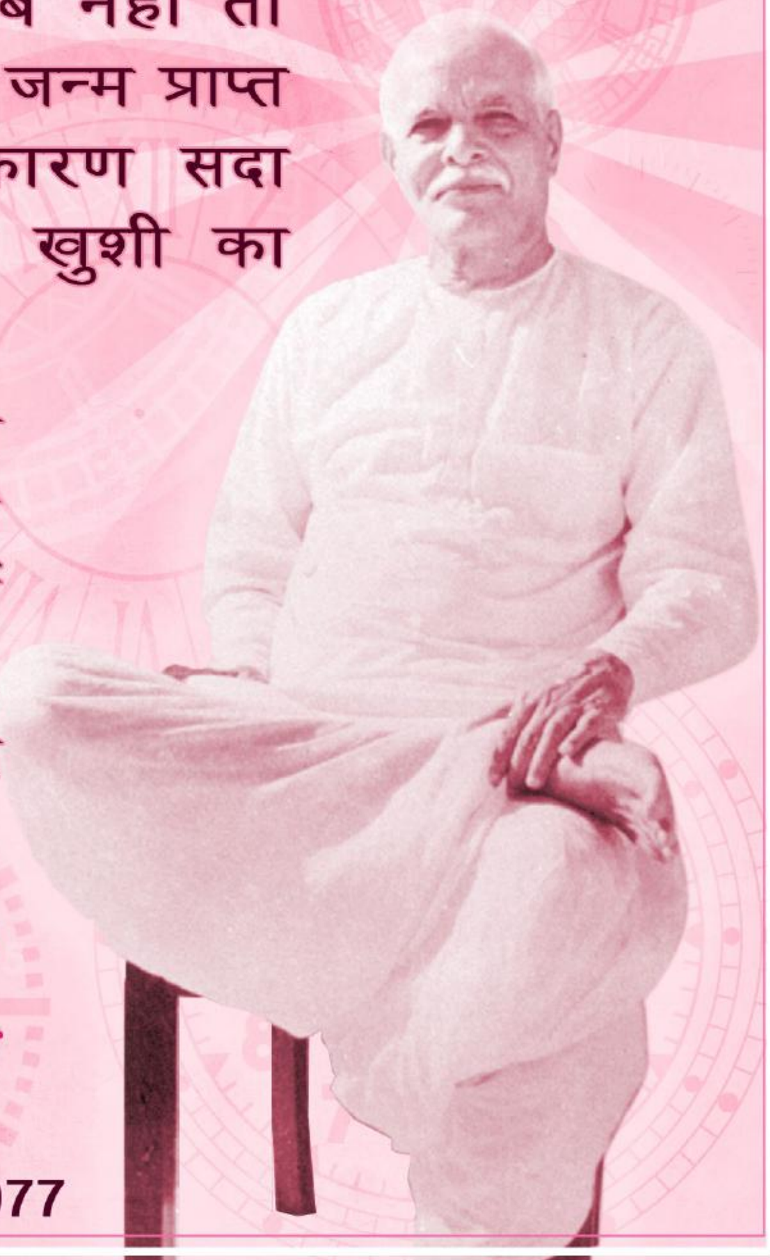

पश्चाताप

लेकिन करते क्या हो? अलबेला अर्थात् करने के समय करते हुए भी उस समय जानते नहीं हो कि कर रहे हैं, पीछे पश्चाताप करते हो। इस कारण डबल, ट्रिपल समय एक बात में गंवा देते हो। **एक करने का समय, दूसरा महसूस करने का समय, तीसरा पश्चाताप करने का समय, चौथा फिर उसको चौक करने के बाद चेज करने का समय तो एक छोटी सी बात में इतना समय व्यर्थ कर देते हो।**

और फिर बार-बार पश्चाताप करते रहने के कारण, कर्मों का फल संस्कार रुप में पश्चाताप के संस्कार बन जाते हैं। जिसको साधारण भाषा में मेरी आदत या नेचर (प्रकृति व स्वभाव) कहते हो।

23-04-1977

पश्चाताप

नेचुरल नेचर ब्राह्मणों की सदा सर्व प्राप्ति की है। अर्थात् ब्राह्मणों के आदि अनादि संस्कार विजय के हैं अर्थात् सम्पन्न बनने के हैं।

पश्चाताप के संस्कार ब्राह्मणों के नहीं हैं। यह क्षत्रियपन के संस्कार हैं।

चंद्रवंशी के संस्कार हैं। सूर्यवंशी सदा सर्व प्राप्ति सम्पन्न स्वरूप है। चंद्रवंशी बार–बार अपने आप में वा बाप से इन शब्दों में पश्चाताप करते हैं – ऐसे सोचना नहीं चाहिए था, बोलना नहीं चाहिए था, करना नहीं चाहिए था, लेकिन हो गया, अब से नहीं करेंगे। कितने बार सोचते वा कहते हो। यह भी रॉयल रूप का पश्चाताप ही है। समझा? कौन से संस्कार हैं? सूर्यवंशी के वा चंद्रवंशी के? **बहुत समय के संस्कार समय पर धोखा दे देते हैं तो पहले स्वयं को स्वयं के धोखे से बचाओ तो समय के धोखे से भी बच जायेंगे।**

23.04.1977

पश्चाताप

माया के अनेक प्रकार के धोखे से भी बच जायेंगे। दुख के अंश मात्र के महसूसता से सदा बच जायेंगे, लेकिन सर्व का आधार - 'समय को व्यर्थ नहीं गंवाओ। हर सेकेण्ड का लाभ उठाओ। समय के वरदानों को स्वयं प्रति और सर्व के प्रति कार्य में लगाओ।

23.04.1977

याद रखो, सच्चे बाप को अपने जीवन की नैया दे दी, तो सत्य के साथ की नांव हिलेगी, लेकिन डूब नही सकती। बाप को जिम्मेवारी देकर वापिस नहीं ले लो। मैं चल सकूंगा - मैं कहां से आई? मैं-पन मिटाना अर्थात् बाप का बनना। यही गलती करते हो, और इसी गलती में स्वयं उलझते परेशान होते।

03.05.1977

पश्चाताप

03.05.1977

मैं करता हूँ या मैं कर नहीं सकता हूँ इस देह-अभिमान के मैं-पन का अभाव हो। इस भाषा को बदली करो। जब मैं बाप की हो गई, वा हो गया, तो जिम्मेदार कौन?

अपनी जिम्मेवारी सिर्फ एक समझो – जैसे बाप चलावे वैसे चलेंगे, जो बाप कहे वह करेंगे। जिस स्थिति के स्थान पर बाप बिठाए वहाँ बैठेगे। **श्रीमत में मैंपन की मनमत मिक्स नहीं करेंगे, तो पश्चाताप से परे, प्राप्ति स्वरूप और पुरुषार्थ की सहज गति प्राप्त करेंगे अर्थात् सदा सद्‌बुद्धि प्राप्त करेंगे।** अपने को वा दूसरों को देख घबराओ मत। क्या होगा? यह भी होगा?

घबराओ नहीं लेकिन गहराई में जाओ।

क्योंकि वर्तमान, अन्तिम समय समीप के कारण एक तरफ, अनेक प्रकार के रहे हुए हिसाब-किताब, स्वभाव-संस्कार वा दूसरे के सम्बन्ध सम्पर्क द्वारा बाहर निकलेंगे अर्थात् अन्तिम विदाई लेंगे।

पश्चाताप

03.05.1977

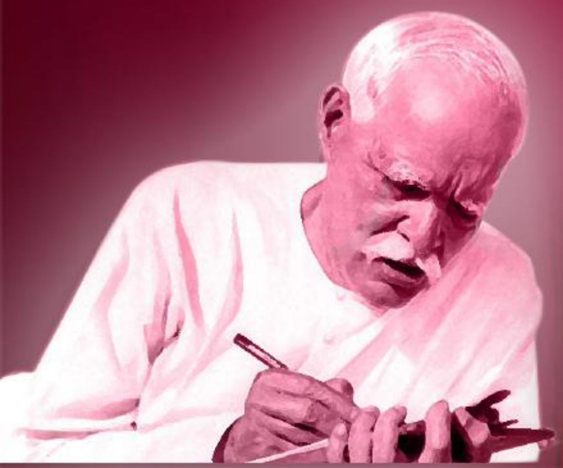

तो बाहर निकलते हुए अनेक प्रकार के मानसिक परीक्षाओं रूपी बीमारियों को देख घबराओ नहीं।

लेकिन यह अति, अन्त की निशानी समझो।

दूसरे तरफ, अन्तिम समय समीप होने के कारण कर्मों की गति की मशीनरी भी तेज रफ्तार से दिखाई देगी। धर्मराजपुरी के पहले यहाँ ही कर्म और उसकी सजा का बहुत साक्षात्कार अभी भी होंगे - आगे चलकर भी। और सत्य बाप के सच्चे बच्चे बन, सत्य स्थान के निवासी बन, जरा भी **असत्य कर्म किया तो प्रत्यक्ष दंड के साक्षात्कार अनेक वंडरफुल (आश्चर्य) रूप के होंगे।**

पश्चाताप

ब्राह्मण परिवार वा ब्राह्मणों की भूमि पर पांव ठहर न सकेंगे, हर दाग स्पष्ट दिखा देगा, छिपा नहीं सकेंगे। स्वयं अपने गलती के कारण मन उलझता हुआ टिका नहीं सकेगा। अपने आप को, अपने आप सजा के भागी बनावेंगे। इसलिए यह सब होना ही है।

इसके नालेजफुल बन घबराओ मत। समझा? मास्टर सर्वशक्तिवान घबराते नहीं हैं।

03.05.1977

अमृतवेले का अनुभव सभी करते हो? अगर किसी को घर बैठे लहटरी मिले और फिर भी उसको वह छोड़ दे तो उसको क्या कहेंगे?

11.05.1977

पश्चाताप

वह भी घर बैठे लॉटरी मिलती है, अगर अभी इस लॉटरी को न लेगे तो यह दिन भी याद करेंगे। अभी यह प्राप्ति के दिन हैं, थोड़े समय के बाद यही दिन पश्चाताप के हो जाएंगे! तो जितना चाहो उतना ली। स्पीड तेज करो।

सदैव याद रखो – अब नहीं तो कभी नहीं। आज भी नहीं, लेकिन अभी – उसको कहा जाता है तीव्र पुरुषार्थी।

11.05.1977

आजकल के नामीग्रामी वा जिनको बड़े आदमी कहते हैं उनका भी अभ्यास होता है, जैसी स्टेज पर जायेंगे, वैसी ड्रेस, वैसा रूप अर्थात् अपने स्वभाव को भी उसी प्रमाण बनाएंगे। अगर खुशी के उत्सव की स्टेज पर जायेंगे तो अपना स्वरूप भी उसी प्रमाण देखेंगे जैसे स्टेज, वैसा स्वरूप के अभ्यासी होते हैं।

10.06.1977

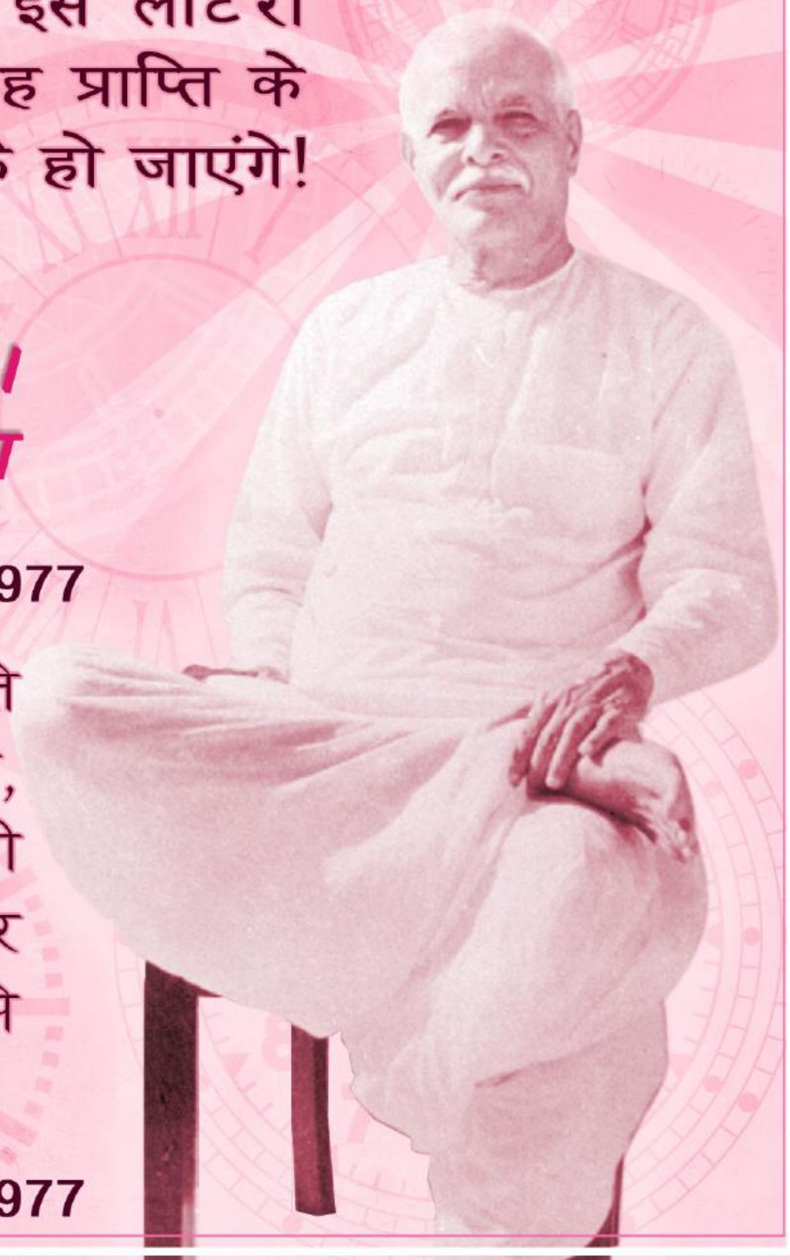

पश्चाताप

चाहे अल्पकाल के लिए हो, बनावटी हो, लेकिन जो ऐसे अभ्यासी व्यक्ति होते हैं वे ही सब द्वारा महिमा के पात्र होते हैं। उनका है बनावटी, आपका रीयल।

तो रीयल्टी और रॉयल्टी के अभ्यासी बनो। जो हो, जैसे हो, जिसके हो उस स्मृति में रहो। पहले मनन करो कि हर समय वैसा स्वरुप रहा? अगर नहीं तो फौरन अपने को चौक करने के बाद चेज करो।

कर्म करने के पहले स्मृति स्वरूप को चौक करो, कर्म करने के बाद नहीं करो। कहीं भी कोई कार्य अर्थ जाना होता है तो जाने के पहले तैयारी करनी होती है, न कि बाद में। ऐसे हर काम करने के पहले स्थिति में स्थित होने की तैयारी करो।

10-06-1977

पश्चाताप

करने के बाद सोचने से कर्म की प्राप्ति के बजाए पश्चाताप हो जाता है। तो द्वापर से प्राप्ति के बजाए प्रार्थना और पश्चात. ाप किया लेकिन अब प्राप्ति का समय है।

तो प्राप्ति का आधार हुआ – जैसा समय वैसा स्मृति स्वरूप।

अब समझा कमी क्या करते हो? जानते सब हो, जानने में तो जानी–जाननहार हो गये, लेकिन जानने के बाद है चलना और बनना। अगर कोई भी विस्मृति के बाद किसी को भी नॉलेज दे कि ऐसे नहीं करो वा ऐसे नहीं करना चाहिए तो क्या उत्तर देते? यही कहेंगे कि हम सब जानते हैं जो आप नहीं जानते।

तो हर प्वाइंट के जानी–जाननहार बन गए हो ना। लेकिन जानी–जाननहार कमजोर कैसे होता है? इतना कमजोर जो समझते भी हैं न करना चाहिए फिर भी कर रहे हैं।

10.06.1977

पश्चाताप

किसी भी बात में हार होने का कारण क्या होता है वह जानते हो? हार खाने का मूल कारण - स्वयं को बार-बार चेक नहीं करते हो। जो समय प्रति समय युक्तियां मिलती, उनको समय पर यूज़ नहीं करते। इस कारण समय पर हार खा लेते हैं। युक्तियां हैं, लेकिन समय बीत जाने के बाद, पश्चाताप के रूप में स्मृति में आती - ऐसे होता था तो ऐसे करते । तो चेकिंग की कमजोरी होने कारण चेन्ज (परिवर्तन) भी नहीं हो सकते।

चेकिंग करने का यंत्र है - दिव्य बुद्धि। वैसे चेकिंग का तरीका चार्ट रखना तो है, लेकिन चार्ट भी दिव्य बुद्धि द्वारा ही ठीक रख सकेंगे। दिव्य बुद्धि नहीं तो रांग को भी राईट समझ लेते।

10.06.1977

पश्चाताप

30.06.1977

अगर कोई यंत्र ठीक नहीं तो रिजल्ट उल्टी निकलेगी। दिव्य बुद्धि द्वारा चेकिंग करने से यथार्थ चेकिंग होती है तो दिव्य बुद्धि द्वारा चेकिंग करो, तो चेंज हो जाएंगे हार के बदले जीत हो जाएगी।

सदा स्वचिन्तन में अपने स्टॉक को जमा करने में लगी। इसी समय को आगे चल करके बहुत याद करना पडेगा। तो पीछे यह न सोचना पडे, पश्चाताप नहीं करना पडे, उसके लिए अभी से स्वचिन्तन में लगो।

सदैव अपने को हर सब्जेक्ट में आगे बढ़ाने में लगे हो? हर गुण के अनुभव को आगे बढ़ाते जाओ। जितना आगे बढ़ाएंगे उतनी नवीनता का अनुभव करेंगे। अनुभवी मूर्त होने की रिसर्च (खोज) करो तो बहुत मजा आएगा। जैसे बाप सागर है वैसे मास्टर सागर बनो। अभी ऐसा पुरुषार्थ चाहिए।

पश्चाताप

07.01.1978

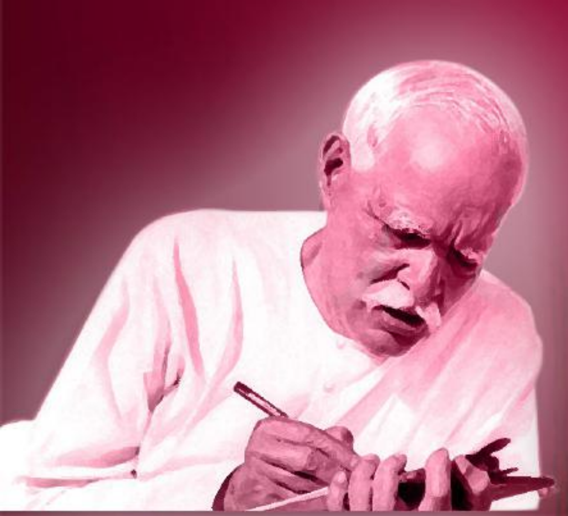

इस बुद्धि के खेल में जो कोटों में कोई पास हुए हैं ऐसे बच्चों को देख बाप-दादा भी हर्षित होते हैं। आप सब भी हर्षित होते हो। बाप ज्यादा हर्षित होते या आप ज्यादा हर्षित होते हो? सदैव यही खुशी के गीत गाते रहो कि जो पाना था, वह पा लिया। इस खुशी में रहने से किसी भी प्रकार की उलझन व उदासी आ नही सकती अर्थात् मायाप्रूफ हो जायेंगे।

ऐसे मायापूफ बन जाओ जो आपका एग्जाम्प बाप-दादा सभी को दिखावें।

ऐसे एग्जाम्पल बने हो? कौन समझते हैं कि हम अभी ऐसे एग्जाम्पल बने हैं जो विश्व के आगे बाप-दादा हमें रख सकते हैं? एवररैडी नहीं रैडी हैं?

पश्चाताप

क्योंकि विदेश के रहने वाले बच्चों को यह भी एक विशेष लिफ्ट है जो स्वयं को विश्व के आगे प्रख्यात कर बाप का परिचय देते हैं-ऐसी सर्विस करने से एक्स्ट्रा मार्क्स मिल जायेंगी। ऐसी सर्विस की है या करनी है? भारत की आत्मायें आप लोगों को देख समझेंगी कि इन्होंने बाप को पहचाना लेकिन हम लोगों ने नहीं पहचाना।

आपकी पहचानी हुई सूरत को देख भारतवासियों को पचाताप होगा कि हमने अपने भाग्य को खो दिया। इसलिए आप सब सर्विस के प्रति निमित हो।

07.01.1978

पश्चाताप

संगमयुग के महत्व को जानते हुए हर संकल्प और सेकेण्ड जमा करते हो? व्यर्थ तो नहीं जाता है? सेकेण्ड भी व्यर्थ गया तो सेकेण्ड की वैल्यू बहुत बड़ी है। जैसे एक का लाख गुना बनता है वैसे एक सेकेण्ड भी व्यर्थ जाता तो लाख गुना व्यर्थ गया। इतना अटेन्शन रहता है। अलबेलापन तो नहीं आता। अभी वह समय नहीं है।

अभी तो चल जाता है, कोई हिसाब लेने वाला ही नहीं है लेकिन थोड़े समय के बाद अपने आपको ही पचाताप होगा। समय की वैल्यू है समय के वरदान से ही अमूल्य रतन बनते हो।

अमूल्य रतन समय भी अमूल्य रीति से व्यतीत करते हैं। अमूल्य रतन समझने से सेकेण्ड और संकल्प भी अमूल्य हो जायेंगे।

18.01.1979

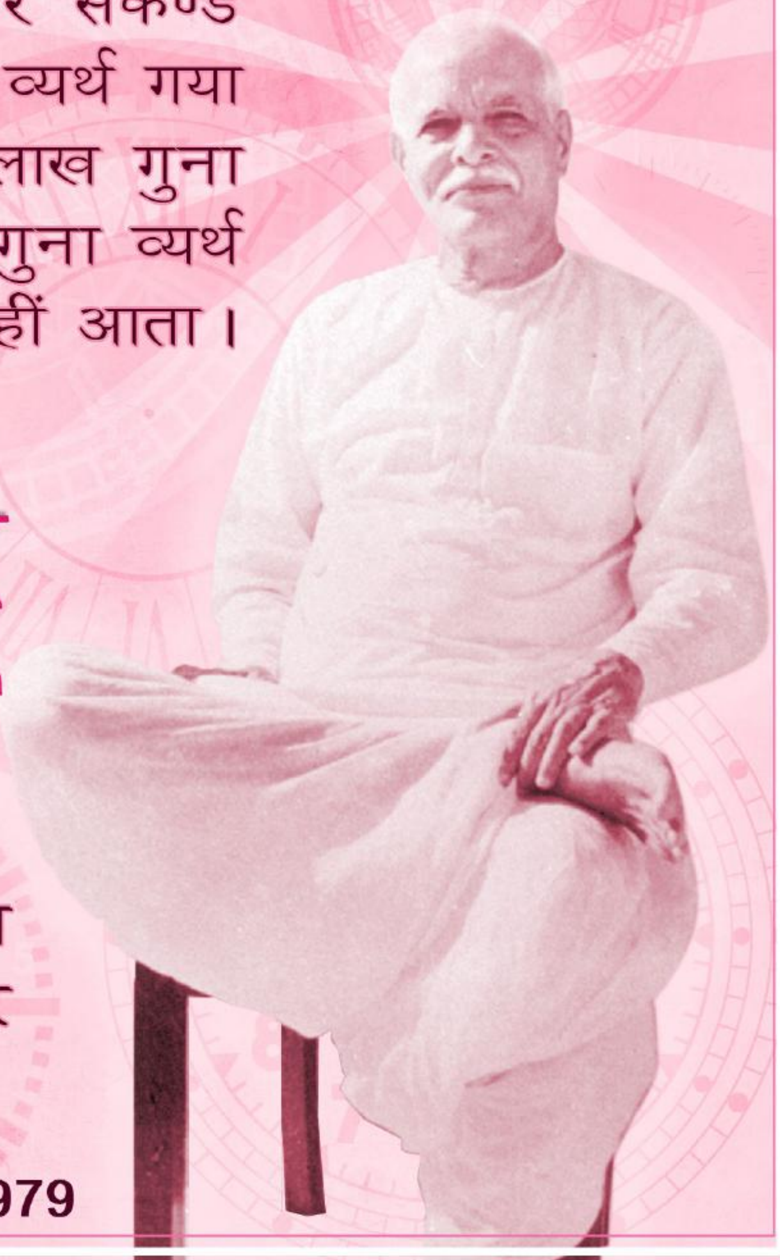

पश्चाताप

जैसे आजकल के यन्त्रों द्वारा रेगिस्तान को भी हरा-भरा कर देते हैं, पहाड़ियों पर भी फूल उगा देते हैं। क्या आप पुण्य आत्माओं के श्रेष्ठ संकल्प द्वारा नाम्मीदवार से उम्मीदवार नहीं बन सकता ? ऐसे हर सेकेण्ड के पुण्य की पुंजी जमा करो। हर सेकेण्ड हर संकल्प की वैल्यू को जान, संकल्प और सेकेन्ड को यूज करो।

जो कार्य आज के अनेक पद्मपति नहीं कर सकते वह आपका एक संकल्प आत्मा को पद्मापद्मपति बना सकता है। तो आपके संकल्प की शक्ति कितनी श्रेष्ठ है।

चाहे जमा करो और कराओ, चाहे व्यर्थ गवाओ, यह आपके ऊपर है। गवाने वाले को पश्चाताप करना पड़ेगा।

10-12-1979

पश्चाताप

कभी सुख के झूले में, कभी शान्ति के झूले में, कभी आनन्द के झूले में। और गँवाने वाले झूले में झूलने वालों को देख अपनी झोली को देखते रहेंगे। आप सब तो झूलने वाले हो ना। अलबेलापन न आए उसकी विधि क्या है? उसकी विधि है?

सदा स्वचिन्तन करो और शुभ चिन्तक बनो।

स्वचिन्तन की तरफ अटेन्शन कम है, **अमृतवेले से लेकर स्वचिन्तन शुरु करो और बार–बार स्वचिन्तन के साथ–सा. थ स्व की चेकिंग करो।**

चेकिंग नहीं करते, चिन्तन नहीं करते, इसको एक दृढ़ संकल्प की रीति से अपने जीवन का निजी कार्य नहीं बनाते, इसलिए अलबेलापन आता है। जैसे भोजन खाना एक निजी कार्य है ना, वह कभी भूलते हो क्या?

10.12.1979

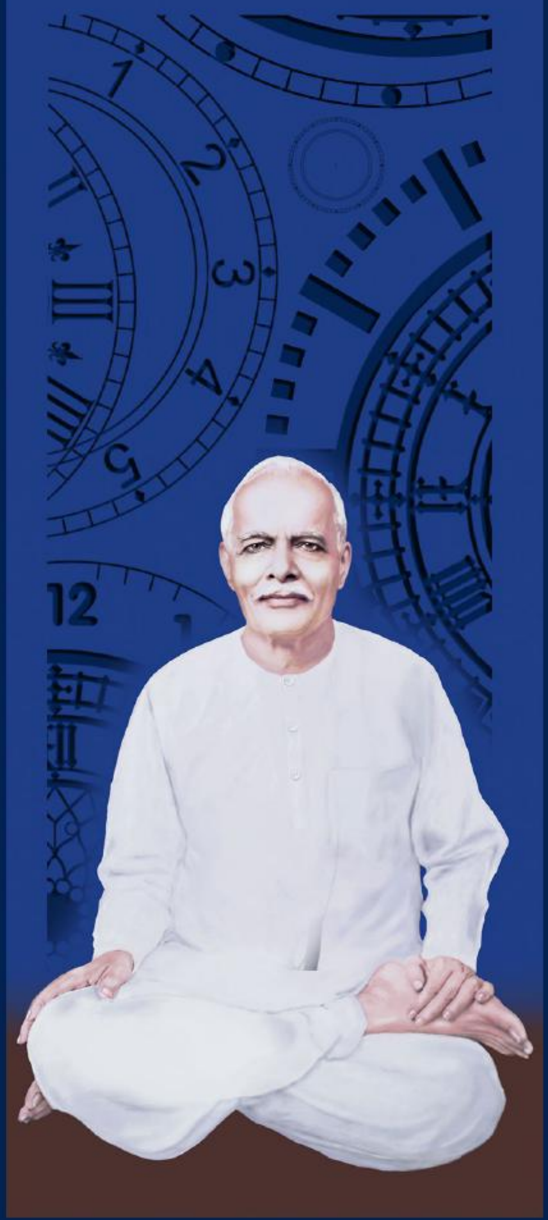

पश्चाताप

आराम करना, यह निजी कार्य है ना, अगर एक दिन भी 2-4 घन्टे आराम कम करेंगे तो चिन्तन चलेगा निंद कम की। जैसे उसको इतना आवश्यक समझते हो वैसे स्वचिन्तन और स्व की चौकिंग, इसको आवश्यक कार्य न समझने के कारण अलबेलापन आता है। पहले वह आवश्यक समझते हो यह नहीं।

अमृतवेले रोज इस आवश्यक कार्य को री-रीफ्रेश करो तभी सारा दिन उसका बल मिलेगा।

अगर फिर भी अलबेलापन आता तो अपने-आपको सजा दो। जो सबसे प्यारी चीज व कर्तव्य लगता हो उससे अपने को किनारा करो।

10.12.1979

पश्चाताप

पश्चाताप करना चाहिए। अभी पश्चाताप कर लेंगे तो पीछे नहीं करना पड़ेगा।

रोज अमृतवेले अपनी महिमा, बाप की महिमा, अपना कर्तव्य, बाप का कर्तव्य रिवाइज करो। एक निजी नियम बनाओ।

अलबेलापन तब आता है जब सिर्फ डायरेक्शन समझा जाता, नियम नहीं बनाते। जैसे दफतर में जाना जीवन का नियम है तो जाते हो ना? ऐसे नीज–नीज को नियम दो। अमृतवेले जीवन के क्या नियम हैं। और हर घण्टे चेकिंग करो कि कहाँ तक नियम को अपनाया है।

हर समय बार–बार चेकिंग करो, सिर्फ रात को नहीं।

10.12.1979

ताजधारी भी देखे, छत्रधरी भी देखे। साथ–साथ सभी ताजधारी तख्तनशीन भी देखे।

तख्त को तो जानते हो – **बाप के दिलतख्तनशीन।**

12.12.1979

पश्चाताप

12.12.1979

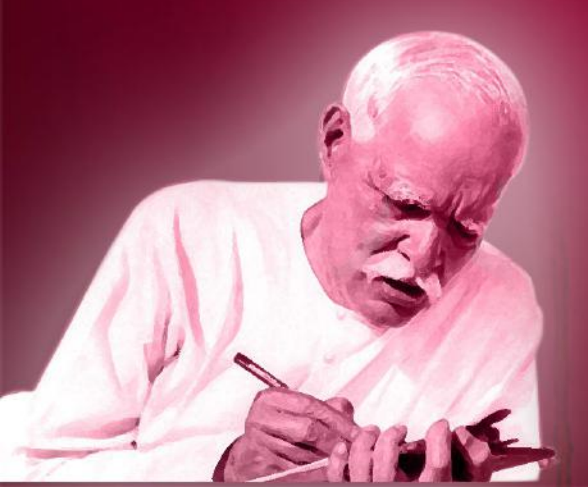

लेकिन यह दिलतख्त कितना प्योर है जो इस तख्त पर सदा बैठ भी वही सकते जो सदा प्योर हैं। बाप तख्त से उतारते नहीं लेकिन स्वयं उतर आते हैं। बाप की सब बच्चों को सदाकाल के लिए ऑफर है कि सब बच्चे सदा तख्तनशीन रहो।

लेकिन ऑटोमेटिक कर्म की गति के चक्र प्रमाण सदाकाल वही बैठ सकता है जो सदा फालो फादर करने वाले हैं। संकल्प में भी अपवित्रता वा अमर्यादा आ जाती है तो तख्तनशीन की बजाए गिरती कला में अर्थात् नीचे आ जाते हैं।

जैसे-जैसे कर्म करते हैं उसी अनुसार उसी समय पश्चाताप करते हैं व महसूस करते हैं कि तख्तनशीन से गिरती कला में आ गये। अगर कोई ज्यादा उल्टा कर्म होता है तो पश्चाताप की स्थिति में आ जाते हैं।

पश्चाताप

अगर कोई विकर्म नहीं लेकिन व्यर्थ कर्म हो जाता है तो पश्चाताप की स्थिति नहीं लेकिन महसूसता की स्टेज होती है। बार-बार व्यर्थ संकल्प महसूसता की स्टेज पर लाता रहेगा कि यह करना नहीं चाहिए। यह राँग है, जैसे काँटे के समान चुभता रहेगा।

जहाँ पश्चाताप की स्थिति व महसूसता की स्टेज अनुभव होगी वहाँ तख्तनशीन के नशे की स्टेज नहीं होगी। फर्स्ट स्टेज है - तख्तनशीन। सेकेण्ड स्टेज है - करने के बाद महसूसता की स्टेज। इसमें भी नम्बर हैं।

12.12.1979

पश्चाताप

कोई करने के बाद महसूस करते हैं। कोई करते समय ही महसूस करते हैं और कोई कर्म होने के पहले ही कैच करते हैं कि कुछ होने वाला है। कोई तूफान आने वाला है। आने के पहले ही महसूस कर, कैच कर समाप्त कर देते हैं।

तो सेकेण्ड स्टेज है महसूसता की। तीसरी स्टेज है – पश्चाताप की।

इसमें भी नम्बर हैं – कोई पश्चाताप के साथ परिवर्तन कर लेते हैं और कई पश्चाताप करते हैं लेकिन परिवर्तन नहीं कर पाते।
पश्चाताप है लेकिन परिवर्तन की शक्ति नहीं है तो उसके लिए क्या करेंगे।

12.12.1979

मधुबन के आंगन में आज अनेक बच्चे फरिश्तों के रुप में हाजिर-नाजिर हैं।

27.10.1981

पश्चाताप

साकार रुप की सभा तो बहुत छोटी है लेकिन आकारी फरिश्तों की सभा बहुत बड़ी है। यह बड़ा हाल जो बना रहे हो वह भी छोटा है। सागर के बच्चों के आगे कितना भी बड़ा हाल बनाओ लेकिन सागर के समान हो जायेगा, फिर क्या करेंगे। आकाश और धरनी, इसी बेहद के हाल में समा सकते हो। बेहद बाप के बच्चे चार दीवारों की हद में कैसे समा सकते हैं।

ऐसा भी समय आयेगा जब बेहद के हाल में यह चार तत्व चार दीवारों का काम करेंगे।

कोई मौसम के नीचे ऊपर के कारण छत की वा दीवारों की आवश्यकता ही नहीं होगी। कहाँ तक बड़े हाल बनायेंगे।

27-10-1981

पश्चाताप

यह प्रकृति भविष्य की रिहर्सल आपको यहाँ ही अन्त में दिखायेगी। चारों ओर कितनी भी किसी तत्व द्वारा हलचल हो लेकिन जहाँ आप प्रकृति के मालिक होंगे वहाँ प्रकृति दासी बन सेवा करेगी।

सिर्फ आप प्रकतिजीत बन जाओ। प्रकृति आप मालिकों का अब से आह्वान कर रही है।

दिव्य दिवस जिसमें प्रकृति मालिकों को माला पहनायेगी, कौन सी माला पहनायेगी? चंदन की माला पहनेंगे वा हीरे रतनों की पहनेंगे? प्रकृति सहयोग की ही माला पहनायेगी। जहाँ आप प्रकृतिजीत ब्राह्मणों का पाँव होगा, स्थान होगा वहाँ कोई भी नुकसान हो नहीं सकता। एक दो मकान के आगे नुकसान होगा लेकिन आप सेफ होंगे। सामने दिखाई देगा यह हो होगा।

27.10.1981

पश्चाताप

वहाँ चिल्लाना होगा यहाँ अचल होंगे। सब आपके तरफ स्थूल-सूक्ष्म सहारा लेने के लिए भागेंगे। आपका स्थान एसलम बन जायेगा। तब सबके मुख से, अहो प्रभू आपकी लीला अपरमपार है यह बोल निकलेंगे। धन्य हो, धन्य हो। आप लोगों ने पाया, हमने नहीं जाना, गंवाया। यह आवाज चारों ओर से आयेगा। फिर आप क्या करेंगे?

विधाता के बच्चे विधाता और वरदाता बनेंगे। लेकिन इसमें भी एसलम लेने वाले भी स्वत: ही नम्बरवार होंगे।

27.10.1981

पश्चाताप

27.10.1981

जो अब से अन्त तक वा स्थापना के आदि से अब तक भी सहयोग भाव में रहे हैं, विरोध भाव में नहीं रहे हैं, मानना न मानना अलग बात है लेकिन ईश्वरीय कार्य में वा ईश्वरीय परिवार के प्रति **विरोध भाव के बजाए सहयोग का भाव, कार्य अच्छा है वा कार्यकर्ता अच्छे हैं, यही कार्य परिवर्तन कर सकता है, ऐसे भिन्न–भिन्न सहयोगी भावनायें वाले, ऐसे आवश्यता के समय इस भावना का फल नजदीक नम्बर में प्राप्त करेंगे अर्थात् एसलम के अधिकारी नम्बरवन बनेंगे।** बाकी इस भावना में भी परसेन्टेज वाले उसी परसेन्ट प्रमाण एसलम की अंचली ले सकेंगे। सकेंगे। बाकी देखने वाले देखते ही रह जायेंगे। जो अभी भी कहते हैं – देख लेंगे, तुम्हारा क्या कार्य है। वा देख लेंगे आपको क्या मिला है।

जब कुछ होगा तब देखेंगे, ऐसे समय की इन्तजार करने वाले, एसलम के इन्तजाम के अधिकारी नहीं बन सकते। उस समय भी देखते ही रह जायेंगे।

पश्चाताप

27.10.1981

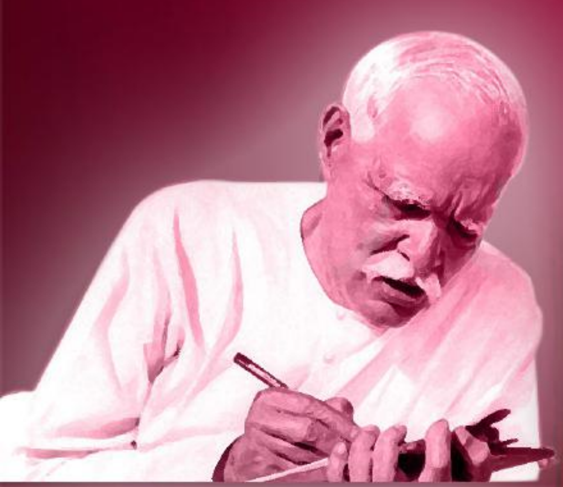

हमारी बारी कब आती है, इसी इन्तजार में ही रहेंगे और आप दूर से इन्तजार करने वाली आत्माओं को भी

मास्टर ज्ञान सूर्य बन, शुभ भावना, श्रेष्ठ बनने के कामना की किरणें चारों ओर की आत्माओं पर विश्व कल्याणकारी बन डालेंगे।

फिर-कितनी भी विरोधी आत्मायें हैं, अपने पश्चाताप की अग्नि में स्वयं को जलता हुआ, बेचौन अनुभव करेंगी।

और आप शीतला देवियाँ बन रहम, दया, कृपा की शीतल छीटों से विरोधी आत्माओं को भी शीतल बनायेंगी। अर्थात् सहारे के गले लगायेंगी।

पश्चाताप

उस समय आपके भक्त बन ओ माँ, ओ माँ पुकारते हुए विरोधी
से बदल भक्त बन जायेंगे। यह हैं आपके लास्ट भक्त।
तो विरोधी आत्माओं को भी अन्त में भक्तपन की अंचली जरुर देगे।
वरदानी बन भक्त भव का वरदान देंगे। फिर भी हैं तो आपके भाई ना।

तो ब्रदरहुड का नाता निभायेंगे, ऐसे वरदानी बने हो? जैसे प्रकृति आपका आह्वान कर रही है ऐसे आप सब भी अपने ऐसे सम्पन्न स्थिति का आहान कर रहे हो?

27.10.1981

पश्चाताप

कई ऐसे भी बच्चे हैं जो चलते-चलते थोड़ा सा अलबेलेपन के कारण तीव्र पुरुषार्थी से ढीले पुरुषार्थी हो जाते हैं। और कई **माया के थोड़े समय के चक्र में भी आ जाते हैं। फिर भी जब फंस जाते हैं तो पश्चाताप में आते हैं।**

पहले माया की आकर्षण के कारण चक्र नहीं लगता लेकिन आराम लगता है। फिर जब चक्र में फंस जाते हैं तो होश में आ जाते हैं और जब होश में आते हैं तो कहते - बाबाबाबा क्या करें। **ऐसे चक्र के वश होने वाले बच्चों के भी बहुत पत्र आते हैं। ऐसे बच्चों को भी बापदादा यादप्यार दे रहे हैं।** और फिर से यही याद दिला रहे हैं।

जैसे भारत में कहावत है कि रात का भूला अगर दिन में घर आ जाए तो भूला नहीं कहलाता।

20.02.1984

पश्चाताप

ऐसे फिर से जागृति आ गई तो बीती सो बीती। फिर से नया उमंग नया उत्साह नई जीवन का अनुभव करके आगे बढ़ सकते हैं।

20-02-1984

जैसे वृक्ष की छाया किसी भी राही को आराम देने वाली है, सहयोगी है।

ऐसे शीतलता की शक्ति वाला अन्य आत्माओं को भी अपने शीतलता की छाया से सदा सहयोग का आराम देता है।

हर एक को आकर्षण होगा कि इस आत्मा के पास जाए दो घड़ी में भी शीतलता की छाया में शीतलता का सुख, आनन्द लेवें। जैसे चारों ओर बहुत तेज धूप हो तो छाया का स्थान ढूंढेगे ना।

21-02-1985

पश्चाताप

ऐसे आत्माओं की नजर वा आकर्षण ऐसी आत्माओं तरफ जाती है। अभी विश्व में और भी विकारों की आग तेज होनी है – जैसे आग लगने पर मनुष्य चिल्लाता है ना। शीतलता का सहारा ढूँढता है। ऐसे यह मनुष्य आत्मायें, आप शीतल आत्माओं के पास तड़पती हुई आयेंगी। जरा–सा शीतलता के छीटे भी लगाओ। ऐसे चिल्लायेंगी। **एक तरफ विनाश की आग, दूसरे तरफ विकारों की आग, तीसरे तरफ देह और देह के संबंध, पदार्थ के लगाव की आग, चौथे तरफ पश्चाताप की आग।** चारों ओर आग ही आग दिखाई देगी। तो ऐसे समय पर आप शीतलता की शक्ति वाली शीतलाओं के पास भागते हुए आयेंगे। सेकण्ड के लिए भी शीतल करो।

ऐसे समय पर इतनी शीतलता की शक्ति स्वयं में जमा हो जो चारों ओर की आग का स्वयं में सेक न लग जाए।

21.02.1985

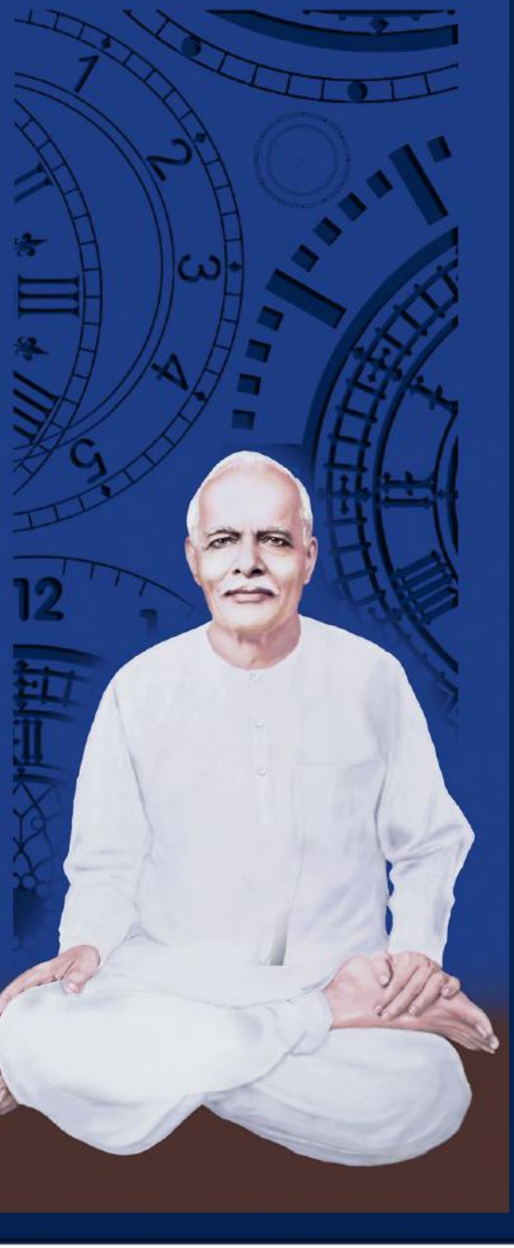

पश्चाताप

चारों तरफ की आग मिटाने वाले शीतलता का वरदान देने वाले शीतला बन जाओ। अगर जरा भी चारों प्रकार की आग में से किसी का भी अंश मात्र रहा हुआ होगा तो चारों ओर की आग अंश मात्र रही हुई आग को पकड़ लेगी।

जैसे आग, आग को पकड लेती है ना तो यह चेक करो। विनाश ज्वाला की अग्नि से बचने का साधन - निर्भयता की शक्ति है। निर्भयता, विनाश ज्वाला के प्रभाव से डगमग नहीं करेगी। हलचल में नहीं लाएगी। निर्भयता के आधार से विनाश ज्वाला में भयभीत आत्माओं को शीतलता की शक्ति देंगे।

21.02.1985

पश्चाताप

21.02.1985

आत्मा भय की अग्नि से बच शीतलता के कारण खुशी में नाचेगी। विनाश देखते भी स्थापना के नजारे देखेंगे।

उनके नयनों में एक आँख में मुक्ति स्वीट होम दूसरी आँख में जीवन मुक्ति अर्थात् स्वर्ग समाया हुआ होगा। उसको अपना घर, अपना राज्य ही दिखाई देगा। लोग चिल्लायेंगे हाय गया, हाय मरा और **आप कहेंगे अपने मीठे घर में, अपने मीठे राज्य में गया। नथिंग न्यू।** यह धुंघरू पहनेंगे। हमारा घर, हमारा राज्य – इस खुशी में नाचते–गाते साथ चलेंगे। वह चिल्लायेंगे और आप साथ चलेंगे। सुनने में ही सबको खुशी हो रही है तो उस समय कितनी खुशी में होंगे!

तो चारों ही आग से शीतल हो गये हो ना? सुनाया ना – विनाश ज्वाला से बचने का साधन है निर्भयता।

पश्चाताप

ऐसे ही विकारों की आग के अंश मात्र से बचने का साधन है - अपने आदि-अनादि वंश को याद करो।

अनादि बाप के वंश सम्पूर्ण सतोप्रधान आत्मा हूँ। आदि स्वंश-देव आत्मा हूँ। देव आत्मा १६ कला सम्पन्न सम्पूर्ण निर्विकारी है। तो अनादि-आदि वंश को याद करो तो विकारों का अंश भी समाप्त हो जायेगा।

21.02.1985

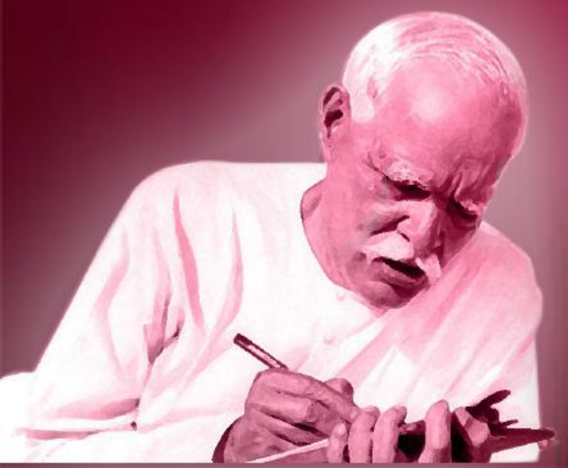

ऐसे ही तीसरी देह, देह के सम्बन्ध और पदार्थ के ममता की आग - इस अग्नि से बचने का साधन है - बाप को संसार बनाओ।

बाप ही संसार है तो बाकी सब असार हो जायेगा।

पश्चाताप

लेकिन करते क्या हैं वह फिर दूसरे दिन सुनायेंगे। बाप ही संसार है यह याद है तो न देह, न सम्बन्ध, न पदार्थ रहेगा। सब समाप्त। चौथी बात-पश्चाताप की आग- इसका सहज साधन है सर्व प्राप्ति स्वरूप बनना। अप्राप्ति पश्चाताप कराती है। प्राप्ति पश्चाताप को मिटाती है।

अब हर प्राप्ति को सामने रख चेक करो। किसी भी प्राप्ति का अनुभव करने में रह तो नहीं गये हैं। प्राप्तियों की लिस्ट तो आती हैं ना। अप्राप्ति समाप्त अर्थात् पश्चाताप समाप्त।

21.02.1985

पश्चाताप

अब इन चारों बातों को चेक करो तब ही शीतलता स्वरूप बन जायेंगे। **औरों की तपत को बुझाने वाले शीतल योगी व शीतला देवी बन जायेंगे।** तो समझा, शीतलता की शक्ति क्या है। सत्यता की शक्ति का सुनाया भी है। आगे भी सुनायेंगे। तो सुना तारामण्डल में क्या देखा। विस्तार फिर सुनायेंगे। – अच्छा।

21.02.1985

दाता अर्थात् ब्रह्मा बाप को फालो करने के लिए सदा अव्यक्त स्थिति भव, फरिश्ता स्वरूप भव, आकारी स्थिति भव। इन दोनों स्थिति में स्थित रहना फालो फादर करना है।

इससे नीचे व्यक्त भाव, देह-भान, व्यक्ति भाव, इसमें नीचे नहीं आओ। व्यक्ति भाव वा व्यक्त भाव - नीचे ले आने का आधार है।

19.12.1985

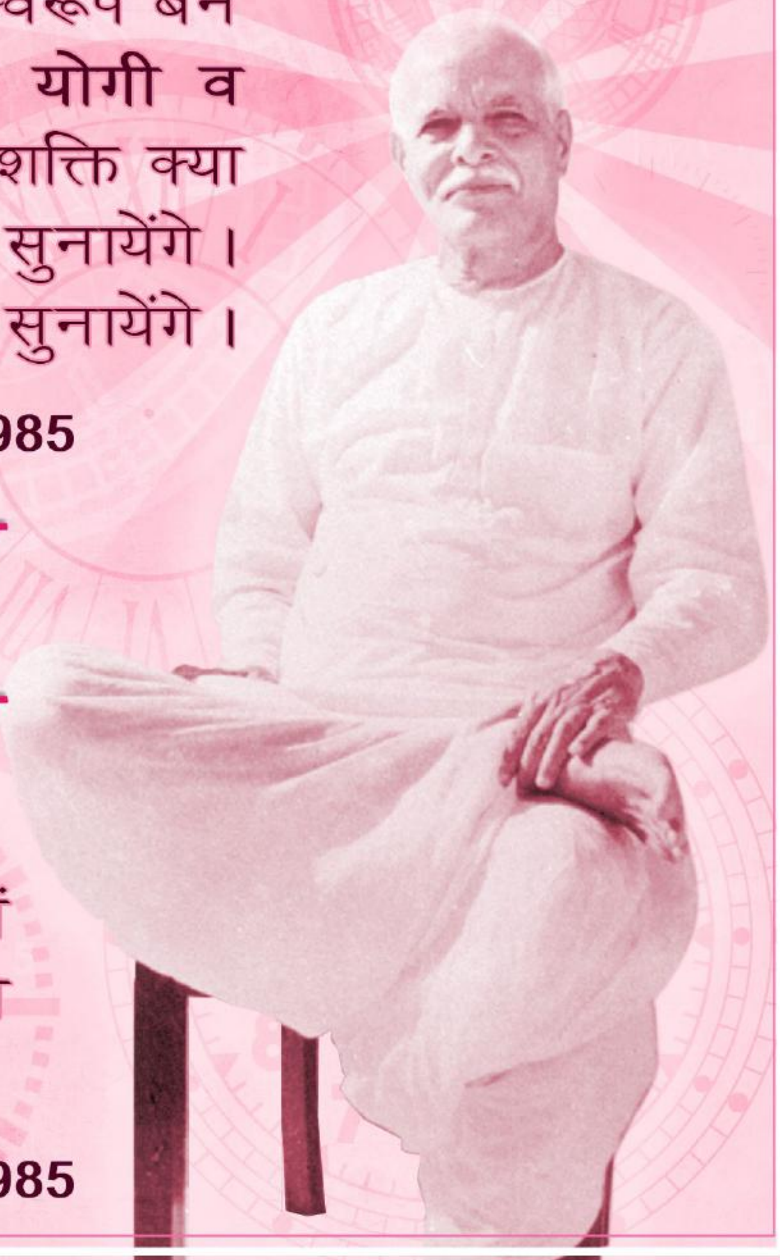

पश्चाताप

इसलिए सबसे परे इन दो स्थितियों में सदा रहो। तीसरी के लिए ब्राह्मण जन्म होते ही बा. पदादा की शिक्षा मिली हुई है कि इस गिरावट की स्थिति में संकल्प से वा स्वप्न में भी नही जाना। यह पराई स्थिति है। जैसे अगर कोई बिना आज्ञा के परदेश चला जाए तो क्या होगा? बापदादा ने भी यह आज्ञा की लकीर खींच दी है। इससे बाहर नहीं जाना है।

इससे बाहर नहीं जाना है। अगर अवज्ञा करते हैं तो परेशान भी होते हैं। पश्चाताप भी करते हैं। इसलिए सदा शान में रहने का, सदा प्राप्ति स्वरुप स्थिति में स्थित होने का सहज साधन है फालो फादर।

फालो करना तो सहज होता है ना! जीवन में बचपन से फालो करने के अनुभवी हो।

19-12-1985

पश्चाताप

बचपन में भी बाप बच्चे को अंगुली पकड़ चलने में, उठने–बैठने में फालो कराते हैं। फिर जब गृहस्थी बनते हैं तो भी पति–पत्नी को एक–दो के पीछे फालो कर चलना सिखलाते हैं। फिर आगे बढ़ गुरु करते हैं तो गुरु के फालोअर्स भी बनते हैं अर्थात् फालो करने वाले। लौकिक जीवन में भी आदि और अन्त में फालो करना होता है।

अलौकिक पारलौकिक बाप भी एक ही सहज बात का साधन बताते हैं, क्या करूं, कैसे करूं, ऐसे करूं या वैसे करूं इस विस्तार से छुड़ा देते हैं

सभी प्रश्नों का उत्तर एक ही बात है – फालो फादर।

19.12.1985

इतना सारा प्रकृति परिवर्तन का कार्य, तमोगुणी संस्कार वाली इतनी आत्माओं का विनाश किसी भी विधि से होगा।

18.01.1986

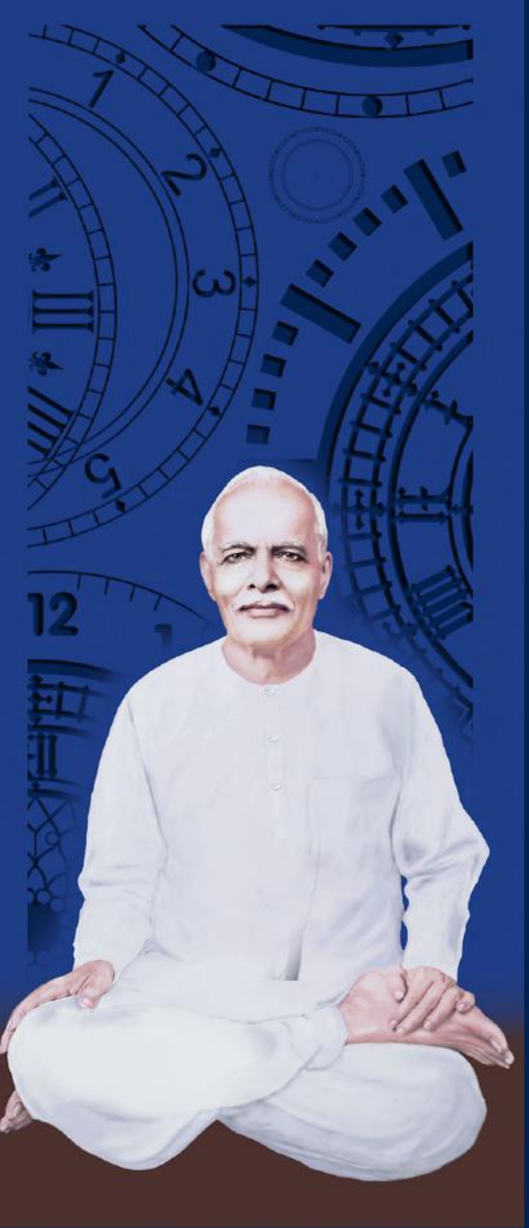

पश्चाताप

लेकिन अचानक के मृत्यु, अकाले मृत्यु, समूह रूप में मृत्यु, उन आत्माओं के वायब्रेशन कितने कितने तमोगुणी होंगे, उसको परिवर्तन करना और स्वयं को भी ऐसे खूनी नाहक वायुमण्डल के वायब्रेशन से सेफ रखना और उन आत्माओं को सहयोग देना - क्या इस विशाल कार्य के लिए तैयारी कर रहे हो? या सिर्फ कोई आया, समझाया और खाया, इसी में ही तो समय नहीं जा रहा है? वह पूछ रहे थे।

आज बापदादा उन्हों का सन्देश सुना रहे हैं। इतना बेहद का कार्य करने के निमित कौन हैं? जब आदि में निमित बने हो तो अन्त में भी परिवर्तन के बेहद के कार्य में निमित बनना है ना।

18.01.1986

पश्चाताप

18.01.1986

वैसे भी कहावत है – जिसने अन्त किया उसने सब कुछ किया।

गर्भ महल भी तैयार करने हैं। तब तो नई रचना का, योगबल का आरम्भ होगा। योगबल के लिए मन्सा शक्ति की आवश्यकता है।

अपनी सेफ्टी के लिए भी मन्सा शक्ति साधन बनेगी। मन्सा शक्ति द्वारा ही स्वयं की अन्त सुहानी बनाने के निमित बन सकेंगे। नहीं तो साकार सहयोग समय पर सरकमस्टांस प्रमाण न भी प्राप्त हो सकता है। उस समय मन्सा शक्ति अर्थात् श्रेष्ठ संकल्प शक्ति, **एक के साथ लाइन क्लीयर नही होगी तो अपनी कमजोरियाँ पचाताप के रूप में भूतों के मिसल अनुभव होंगी।** क्योंकि स्मृति में कमजोरी आने से भय – भूत की तरह अनुभव होगा। अभी भले कैसे भी चला लेते हो लेकिन अन्त में भय अनुभव होगा।

पश्चाताप

इसलिए अभी से बेहद की सेवा के लिए, स्वयं की सेफ्टी के लिए मन्सा शक्ति और निर्भयता की शक्ति जमा करो, तब ही अन्त सुहाना और बेहद के कार्य में सहयोगी बन बेहद के विश्व के राज्य अधिकारी बनेंगे।

अभी आपके साथी, आपके सहयोग का इन्तजार कर रहे हैं। कार्य चाहे अलग-अलग है लेकिन परिवर्तन के निमित दोनों ही हैं। वह अपनी रिजल्ट सुना रहे थे।

18.01.1986

निरन्तर योगी अर्थात् स्वराज्य अधिकारी बनने का विशेष साधन ही मन और बुद्धि है। मन्त्र ही मन्मनाभव का है। योग को बुद्धियोग कहते हैं।

21.01.1987

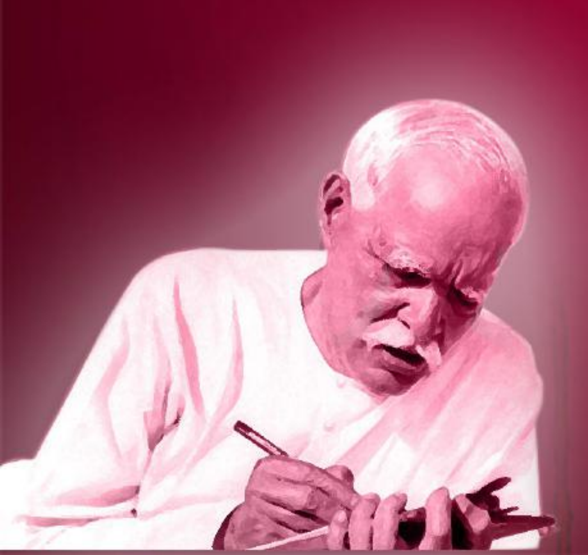

पश्चाताप

तो अगर यह विशेष आधार स्तम्भ अपने अधिकार में नहीं हैं वा कभी हैं, कभी नहीं है अभी-अभी हैं, अभी-अभी नहीं है तीनों में से एक भी कम अधिकार में है तो इससे ही चेक करो कि हम राजा बनेंगे या प्रजा बनेंगे? **बहुतकाल के राज्य अधिकारी बनने के संस्कार बहुतकाल के भविष्य राज्य-अधिकारी बनायेंगे।** अगर कभी अधिकारी, कभी वशीभूत हो जाते हो तो आधाकल्प अर्थात् पूरा राज्यभाग्य का अधिकार प्राप्त नहीं कर सकेंगे।

आधा समय के बाद त्रेतायुगी राजा बन सकते हो, सारा समय राज्य अधिकारी अर्थात् राज्य करने वाले रॉयल फैमिली के समीप सम्बन्ध में नहीं रह सकते।

21.01.1987

पश्चाताप

अगर वशीभूत बार-बार होते हो तो संस्कार अधिकारी बनने के नहीं लेकिन राज्य अधिकारीयों के राज्य में रहने वाले हैं। वह कौन हो गये? वह हुई प्रजा। तो समझा, राजा कौन बनेगा, प्रजा कौन बनेगा? अपने ही दर्पण में अपने तकदीर की सूरत को देखो। यह ज्ञान अर्थात् नालेज दर्पण है। **अभी बहुत समय के अधिकारी बनने का अभ्यास करो।**

ऐसे नहीं अन्त में तो बन ही जायेंगे। अगर अन्त में बनेंगे तो अन्त का एक जन्म थोड़ा-सा राज्य कर लेंगे।

लेकिन यह भी याद रखना कि अगर बहुत समय का अब से अभ्यास नहीं होगा वा आदि से अभ्यासी नहीं बने हो, आदि से अब तक यह विशेष कार्यकर्ता आपको अपने अधिकार में चलाते हैं वा डगमग स्थिति करते रहते हैं अर्थात् धोखा देते रहते हैं, दुख की लहर का अनुभव कराते रहते हैं तो अन्त में भी धोखा मिल जायेगा।

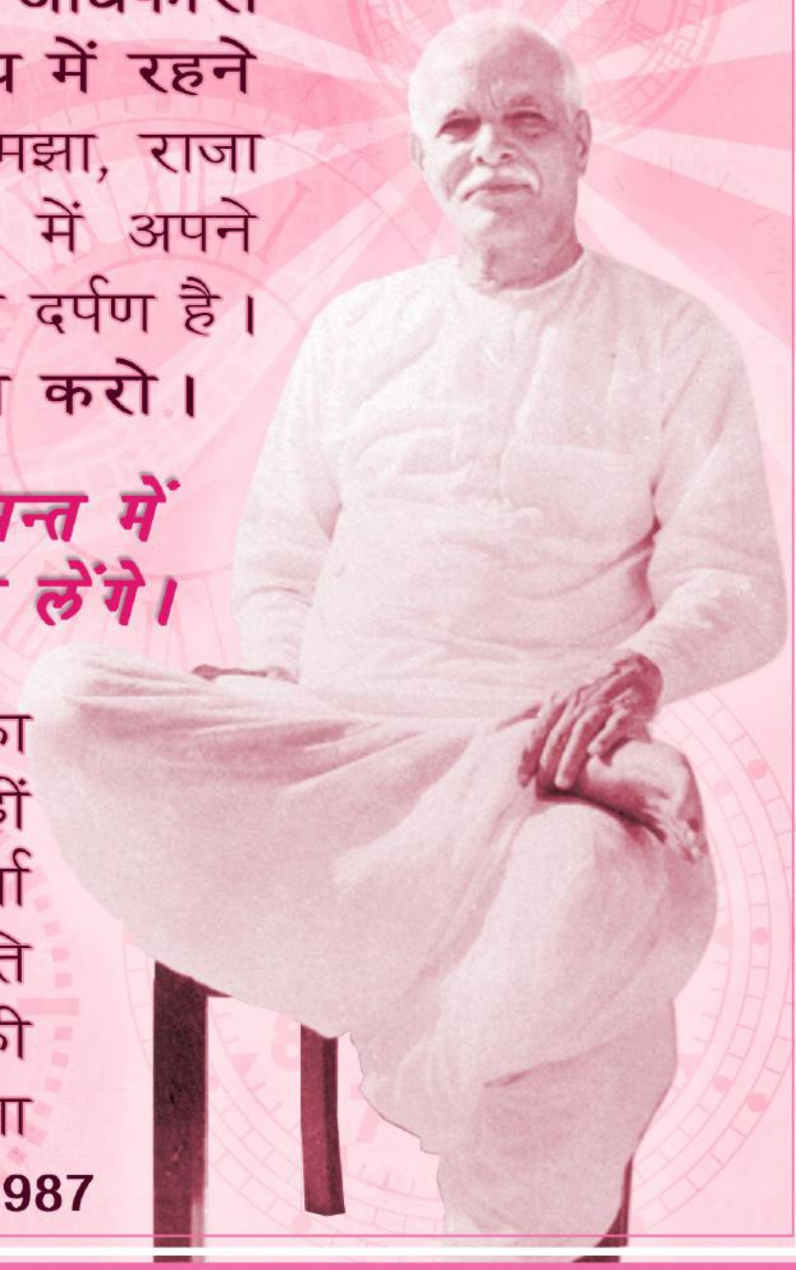

21.01.1987

पश्चाताप

धोखा अर्थात दुख की लहर जरूर आयेगी। तो अन्त में भी पश्चाताप के दुख की लहर आयेगी। इसलिए बापदादा सभी बच्चों को फिर से स्मृति दिलाते हैं कि राजा बनो और अपने विशेष सहयोगी कर्मचारी वा राज्य कारोबारी साथियों को अपने अधिकार से चलाओ। समझा?

21-01-1987

सभी दृष्टि द्वारा शक्तियों के प्राप्ति की अनुभूति करने के अनुभवी हो ना। जैसे वाणी द्वारा शक्ति की अनुभूति करते हो। मुरली सुनते हो तो समझते हो ना - शक्ति मिली। ऐसे दृष्टि द्वारा शक्तियों की प्राप्ति के अनुभूति के अभ्यासी बने हो या वाणी द्वारा अनुभव होता है, दृष्टि द्वारा कम ?

दृष्टि द्वारा शक्ति कैच कर सकते हो?

11-11-1989

पश्चाताप

क्योंकि कैच करने के अभ्यासी होंगे तो दूसरों को भी अपने दिव्य दृष्टि द्वारा अनुभव करा सकते हैं। आगे चलकर वाणी द्वारा सबको परिचय देने का समय भी नहीं होगा और सरकमस्टांस भी नहीं होंगे तो क्या करेंगे?

वरदानी दृष्टि द्वारा, महादानी दृष्टि द्वारा महादान, वरदान देंगे। दृष्टि द्वारा शान्ति की शक्ति, प्रेम की शक्ति - सुख वा आनन्द की शक्ति सब प्राप्त होती हैं।

जड़ मूर्तियों के आगे जाते हैं तो जड़ मूर्ति बोलती तो नहीं है ना। फिर भी भक्त आत्माओं को कुछ-न-कुछ प्राप्ति होती है। तब तो जाते हैं ना। कैसे प्राप्ति होती है? **उनके दिव्यता के वायब्रेशन से और दिव्य नयनों की दृष्टि को देख वायब्रेशन लेते हैं।** कोई भी देवता या देवी की मूर्ति में विशेष अटेन्शन नयनों के तरफ देखेंगे।

11.11.1989

पश्चाताप

फेस की तरफ अटेन्शन जाता है क्योंकि मस्तक के द्वारा वायब्रेशन मिलता है, नयनों द्वारा दिव्यता की अनुभूति होती है। वह तो हैं जड मूर्तियाँ। लेकिन किसकी हैं? आप चैतन्य मूर्तियों की जड मूर्तियाँ हैं। यह नशा है कि हमारी मूर्तियाँ हैं?

चैतन्य में यह सेवा की है तब जड़ मूर्तियाँ बनी हैं। तो दृष्टि द्वारा शक्ति लेना और दृष्टि द्वारा शक्ति देना, यह प्रैक्टिस करो।

शान्ति के शक्ति की अनुभूति बहुत श्रेष्ठ है। जैसे वर्तमान समय साइन्स की शक्ति का कितना प्रभाव है, हर एक अनुभव करते है ।

11.11.1989

पश्चाताप

11.11.1989

लेकिन साइंस अल्पकाल के लिए प्राप्ति करा रही है, तो साइलेन्स की शक्ति कितनी प्राप्ति करायेगी। तो बाप के दिव्य दृष्टि द्वारा स्वयं में शक्ति जमा करो। तो फिर जमा किया हुआ समय पर दे सकेंगे। अपने लिए ही जमा किया और कार्य में लगा दिया अर्थात् कमाया और खाया।

जो कमाते हैं और खा करके खत्म कर देते हैं उनका कभी जमा नहीं होता। और जिसका जमा का खाता नहीं होता उसको समय पर धोखा मिलता है। धोखा मिलेगा तो दुख की प्राप्ति होगी।

ऐसे ही साइलेन्स की शक्ति जमा नहीं होगी, दृष्टि के महत्व का अनुभव नहीं होगा तो लास्ट समय श्रेष्ठ पद प्राप्त करने में धोखा खा लेंगे। फिर दुख होगा, पश्चाताप होगा।

इसलिए अभी से बाप की दृष्टि द्वारा प्राप्त हुई शक्तियों को अनुभव करते जमा करते रहो। तो जमा करना आता है?

पश्चाताप

11.11.1989

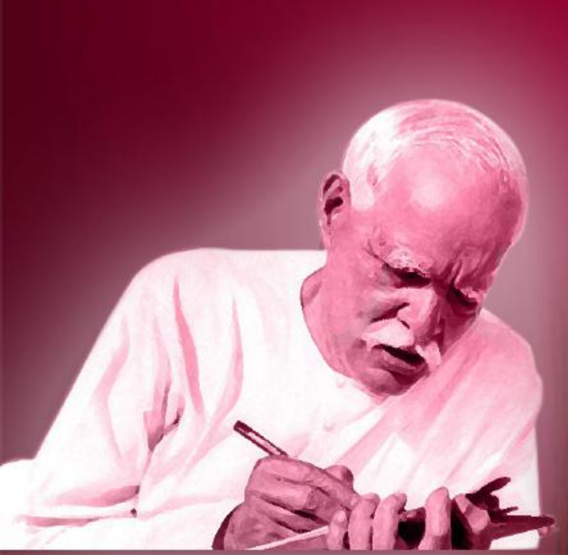

जमा होने की निशानी क्या होगी? नशा होगा। जैसे साहूकार लोगों के चलने, बैठने, उठने में नशा दिखाई देता है और जितना नशा होता उतनी खुशी होती है। तो यह है रूहानी नशा। इस नशे में रहने से खुशी स्वतः होगी।

खुशी ही जन्म-सिद्ध अधिकार है। सदा खुशी की झलक से औरों को भी रूहानी झलक दिखाने वाले बनो। इसी वरदान को सदा स्मृति में रखना।

कुछ भी हो जाए - खुशी के वरदान को खोना नहीं। समस्या आयेगी और जायेगी लेकिन खुशी नहीं जाये। क्योंकि खुशी हमारी चीज है, समस्या परिस्थिति है, दूसरे के तरफ से आई हुई है। अपनी चीज को तो सदा साथ रखते हैं ना।

पश्चाताप

परायी चीज तो आयेगी भी और जायेगी भी।

परिस्थिति माया की है, अपनी नहीं है। अपनी चीज को खोना नहीं होता है। तो खुशी को खोना नहीं।

खुशी से शरीर भी जायेगा तो बढ़िया मिलेगा। पुराना जायेगा नया मिलेगा।

11.11.1989

अभी तक आप ब्राह्मण-आत्मायें अपने तन-मन की मेहनत से प्रोग्राम्स बनाते हो, स्टेज तैयार करते हो, निमंत्रण कार्ड छपाते हो, कोई वी.आई.पी. को बुलाते हो, रेडियो, टी.वी. वालों को सहायेगी बनाते हो, धन भी लगाते हो। लेकिन आगे चल आप स्वयं वी.आई.पी. हो जायेंगे।

18.01.1990

पश्चाताप

आपसे बड़ा कोई दिखाई नहीं देगा। बनी-बनाई स्टेज पर दूसरे लोग आपको निमंत्रण देंगे। अपने तन-मन-धन की सेवाओं की स्वयं ऑफर करेंगे। आपकी मिन्नते करेंगे। मेहनत आप नहीं करेंगे, **वह रिक्वेस्ट करेंगे कि आप हमारे पास आओ। तब ही प्रत्यक्षता की आवाज बुलंद होगी और सबकी अटेन्शन आप बच्चों द्वारा बाप तरफ जायेगी।** यह ज्यादा समय नहीं चलेगा।

सबकी नजर बाप तरफ जाना अर्थात् प्रत्यक्षता होना और जय-जयकार के चारों ओर घंटे बजेंगे। यह ड्रामा का सूक्ष्म राज बना हुआ है।

प्रत्यक्षता के बाद अनेक आत्माएं पश्चाताप करेंगी। और बच्चों का पश्चाताप बाप देख नहीं सकता। इसलिए परिवर्तन हो जायेगा। अभी आप ब्राह्मण-आत्माओं की ऊंची स्टेज सदाकाल की बन रही है।

18.01.1990

पश्चाताप

आपकी ऊंची स्टेज सेवा की स्टेज के निमंत्रण दिलायेगी। और बेहद विश्व की स्टेज पर जय-जयकार का पार्ट बजायेंगे। सुना, सेवा का परिवर्तन।

18-01-1990

असत्य और सत्य में विशेष अन्तर क्या है? असत्य की जीत अल्पकाल की होती है क्योंकि असत्य का राज्य ही अल्पकाल का है। सत्यता की हार अल्पकाल की और जीत सदाकाल की है।

असत्य के अल्पकाल के विजयी उस समय खुश होते हैं जितना थोड़ा समय खुशी मनाते वा अपने को राइट सिद्ध करते, तो समय आने पर असत्य के अल्पकाल का समय समाप्त होने पर जितनी असत्यता के वश मौज मनाई, उतना ही सौ गुणा सत्यता की विजय प्रत्यक्ष होने पर पचाताप करना ही पड़ता है।

24-09-1992

पश्चाताप

क्योंकि बाप से किनारा, स्थूल में किनारा नहीं होता, स्थूल में तो स्वयं को ज्ञानी समझते हैं लेकिन मन और बुद्धि से किनारा होता। और बाप से किनारा होना अर्थात् सदाकाल की सर्व प्राप्तियों के अंधकार से सम्पन्न के बजाए अधूरा अधिकार प्राप्त होना। कई बच्चे समझते हैं कि असत्य के बल से असत्य के राज्य में विजय की खुशी वा मौज इस समय तो मना लें, भविष्य किसने देखा। कौन देखेगा–हम भी भूल जायेंगे, सब भूल जायेंगे। लेकिन यह असत्य की जजमेंट है। भविष्य वर्तमान की परछाई है। बिना वर्तमान के भविष्य नहीं बनता।

असत्य के वशीभूत आतमा वर्तमान समय भी अल्पकाल के सुख के–नाम, मान, शान के सुखों के झूले में झूल सकती हैं और झूलती भी हैं, लेकिन अतीन्द्रिय अविनाशी सुख के झूले में नहीं झूल सकती।

24.09.1992

पश्चाताप

अल्पकाल के शान, मान और नाम की मौज मना सकते हैं लेकिन सर्व आत्माओं के दिल के स्नेह का, दिल की दुआओं का मान नहीं प्राप्त कर सकते। दिखावा-मात्र मान पा सकते हैं लेकिन दिल से मान नहीं पा सकते। अल्पकाल का शान मिलता है लेकिन बाप से सदा दिलतख्त-नशीन का शान अनुभव नहीं कर सकते।

असत्य के साथियों द्वारा नाम प्राप्त कर सकते हैं लेकिन बापदादा के दिल पर नाम नहीं प्राप्त कर सकते। क्योंकि बापदादा से किनारा है। भविष्य की बात तो छोड़ो, वह तो अन्डरस्टुड है।लेकिन वर्तमान सत्यता और असत्यता की प्राप्ति में कितना अन्तर है?

24.09.1992

पश्चाताप

10.01.1994

एक दूसरा मेरा बनाया अर्थात् असत्य का सहारा लिया। कितना झमेला हुआ। कहने में तो कहेंगे और कुछ नहीं, सिर्फ कभी–कभी थोड़ा सहारा चाहिए। लेकिन वायदा तोड़ना अर्थात् झमेले में पड़ना। क्या ऐसा वायदा किया है – एक मेरा बाबा और कभी कभी दूसरा? दूसरा भी एलाउ है? यह लिखा था क्या? चाहे अल्पकाल के नाममान–शान का सहारा लो, चाहे व्यक्ति का लो, चाहे वैभव का लो, जब दूसरा न कोई तो फिर दूसरा कहाँ से आया? यह असत्य के राज्य के झमेले में फंसाने की चतुराइयां हैं। **जैसे बाप कहते हैं ना–मैं जो हूँ, जैसा हूँ, वैसा मुझे नम्बरवार जानते हैं। ऐसे असत्य के रा. ज्य–अधिकारी रावण को भी जो है, जैसा है, वैसे सदा नहीं जानते हो। कभी भूल जाते हो, कभी जानते हो। रा. ज्य–अधिकारी है तो यह ताकत कम होगी! चाहे झूठा हो, चाहे सच्चा हो लेकिन राज्य तो है ना। इसलिए अपने को चेक करो, दूसरे को नहीं।**

अविनाशी बाप और अविनाशी प्राप्ति के अधिकारी हम आत्मायें हैं–यह सदा इमर्ज रूप में रहे।

पश्चाताप

10.01.1994

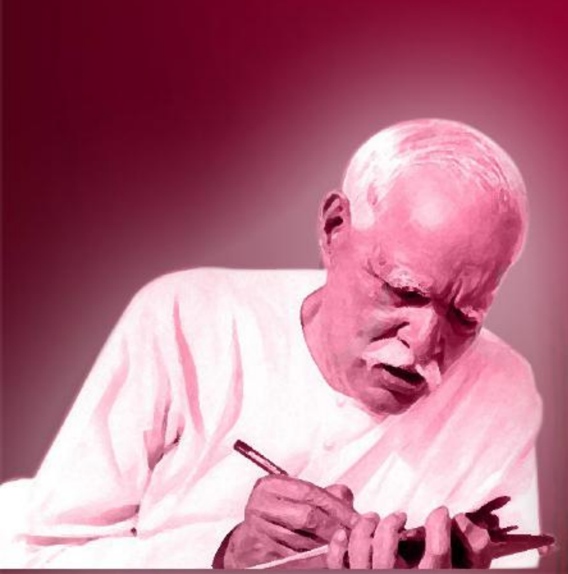

ऐसे नहीं हैं तो! बने तो हैं। जानते तो हैं। ऐसे नहीं। प्रैक्टिकल में हैं। जो जानते हैं वही निश्चय कर चलते हैं। तो हर कर्म में विजय का निश्चय और नशा हो। नशे का आधार है ही निश्चय। निश्चय कम तो नशा कम। इसीलिये कहते हैं निश्चयबुद्धि विजयी। तो फाउन्डेशन क्या हुआ? निचय। निश्चय में कभी-कभी वाले नहीं बनना। नहीं तो अन्त में रिजल्ट के समय भी प्राप्ति कभी-कभी की होगी फिर पश्चाताप करना पड़ेगा। अभी प्राप्ति है, फिर पश्चाताप होगा।

तो प्राप्ति के समय प्राप्ति करो, पश्चाताप के समय प्राप्ति नहीं कर सकेंगे। कर लेंगे, हो जायेगा! नहीं, करना ही है-यह निश्चय हो। कर लेंगे. दिलासे पर नहीं चलो।

पश्चाताप

कर तो रहे हैं ना. और क्या होगा. हो ही जायेंगे. नहीं, अभी होना है। गें-गें नहीं हैं। जब दूसरों को चौलेन्ज करते हो कि श्वास पर कोई भरोसा नहीं, औरों को ज्ञान देते हो ना तो पहले स्वयं को ज्ञान दो। कभी करने वाले हैं या अब करने वाले हैं? तो सदा विजय के अधिकारी आत्मायें हो। विजय जन्म-सिद्ध अधिकार है-इस स्मृति से उड़ते चलो। कुछ भी हो जाये, ये स्मृति में लाओ कि मैं सदा विजयी हूँ। क्या भी हो जाये, निश्चय अटल है, कोई टाल नहीं सकता।

अपने को कल्प-कल्प की पूज्य आत्मायें अनुभव करते हो? स्मृति है कि हम ही पूज्य थे, हम ही हैं और हम ही बनेंगे?

10.01.1994

पश्चाताप

पूज्य बनने का विशेष साधन क्या है? कौन पूज्य बनते हैं? जो श्रेष्ठ कर्म करते हैं और श्रेष्ठ कर्मों का भी फाउन्डेशन है पवित्रता। पवित्रता पूज्य बनाती।

अभी भी देखो जो नाम से भी पवित्र बनते हैं तो पूज्य बन जाते हैं। लेकिन पवित्रता सिर्फ ब्रह्मचर्य नहीं। ब्रह्मचर्य व्रत को धारण किया इसमें ही सिर्फ श्रेष्ठ नहीं बनना है। यह भी श्रेष्ठ है लेकिन साथ में और भी पवित्रता चाहिये।

अगर मन्सा संकल्प में भी कोई निगेटिव संकल्प है तो उसे भी पवित्र नहीं कहेंगे, इसलिए किसी के प्रति भी निगेटिव संकल्प नहीं हो।

अगर बोल में भी कोई ऐसे शब्द निकल जाते हैं जो यथार्थ नहीं है तो उसको भी पवित्रता नहीं कहेंगे।

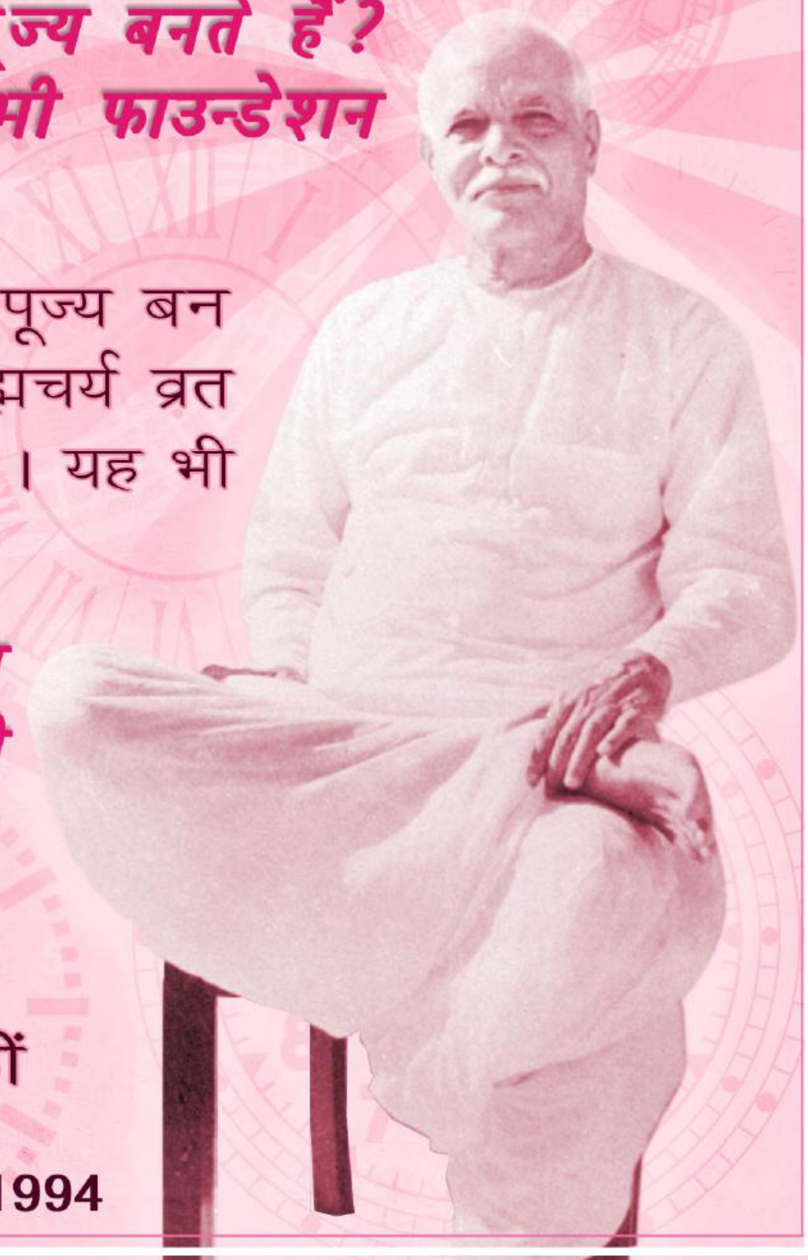

10.01.1994

पश्चाताप

तो ऐसे मन्सा-वाचा-कर्मणा अर्थात् सम्बन्ध-सम्पर्क में पवित्र हो? ऐसे पूज्य बने हो? अगर मानो कोई भी बात में कमी है तो उसको खण्डित कहा जाता है। खण्डित मूर्ति की पूजा नहीं होती है। इसलिए जरा भी मन्सा, वाचा, कर्मणा में खण्डित नहीं हो अर्थात् अपवित्रता न हो, तब कहा जायेगा पूज्य आत्मा। तो ऐसे पूज्य बने हो? जड़ मूर्ति भी खण्डित हो जाती है तो पूजा नहीं होती। उसको पत्थर मानेंगे, मूर्ति नहीं मानेंगे। म्युजियम में रखेंगे, मन्दिर में नहीं रखेंगे।

ऐसे पवित्रता का फाउन्डेशन चेक करो-कोई भी संकल्प आये, तो स्मृति में लाओ कि मैं परम पूज्य आत्मा हूँ।

10-01-1994

पश्चाताप

यह याद रहता है या जिस समय कोई बात आती है उस समय भूल जाता है, पीछे याद आता है? फिर पश्चाताप होता है–ऐसे नहीं करते तो बहुत अच्छा होता।

तो सदा पवित्र आत्मा हूँ पावन आत्मा हूँ पवित्रता अर्थात् स्वच्छता। स्वच्छता कितनी प्यारी लगती है।

अगर मन्दिर भी हो, मूर्ति भी हो लेकिन स्वच्छता नहीं तो अच्छा लगेगा? तो मैं पूज्य आत्मा इस शरीर रूपी मन्दिर में विराजमान हूँ ये स्मृति सदा जीवन में लाओ। सिर्फ सोचो नहीं लेकिन जीवन में लाओ। सोचते तो बहुत हैं ना–ये भी हूँ ये भी हूँ लेकिन प्रैक्टिकल अनुभव में आये। तो क्या याद रखेंगे? सम्पूर्ण पूज्य आत्मा हूँ। परसेन्टेज में नहीं – 80 परसेन्ट पूज्य, 20 परसेन्ट खण्डित नहीं। तो 100 परसेन्ट पूज्य अर्थात् 100 परसेन्ट पवित्र।

10.01.1994

पश्चाताप

सभी को स्वच्छता अच्छी लगती है या कचरा अच्छा लगता है? तो अपने से पूछो कि मन स्वच्छ बना है, बुद्धि स्वच्छ बनी है? या थोडी-थोडी स्वच्छ बनी है, थोडी-थोडी अस्वच्छ है? अगर यहाँ कचरा पडा हो तो आप उस पर बैठेंगे? उस पर बैठना अच्छा नहीं लगेगा ना तो ऐसे सोचो कि जरा भी अपवित्रता अर्थात् कचरा है तो बाप को अच्छा नहीं लगेगा। कचरा है तो बाप के प्यारे तो नहीं हुए ना। ब्राह्मण बने ही हो बाप का प्यारा बनने के लिए पूज्य आत्मायें सर्व की प्यारी हैं। जड मूर्ति है लेकिन कितनी प्यारी लगती है।

अपने चैतन्य परिवार से इतना प्यार नहीं होगा जितना मूर्ति से प्यार होगा। आपस में झगड़ेंगे लेकिन मूर्ति को प्यार करेंगे। क्यों प्यार करते हैं? पवित्रता है ना। पवित्रता अर्थात् जरा भी अपवित्रता नहीं हो।

24.09.1992

पश्चाताप

10.01.1994

सभी को सुनाते हो ना कि अगर एक बूंद भी विष की एक मण दूध में पड़ जाये तो सारा विष हो जायेगा। ऐसे अगर जरा भी अशुद्धि है तो कौन–सी आत्मा कहलायेंगे? शुद्ध या अशुद्ध? कहेंगे आधे, हाफ कास्ट हैं।

तो सदा हर कर्म करते, संकल्प करते, बोल बोलते ये चेक करो कि बाप को प्यारे कौन हैं? पवित्र आत्मा या मिक्स आत्मा? पवित्र आत्मा प्यारी है क्योंकि बाप सदा परम पवित्र है तो उसको प्यारी भी पवित्रता लगती है।

तो इस वर्ष में क्या करेंगे? जरा भी खण्डित नहीं। सदा परमपूज्य। कमाल करके दिखायेंगे ना कि सोचेंगे, देखेंगे? नहीं। करेंगे। हाथ उठाने का फोटो निकल रहा है। अच्छा है बाप तो सदा ही बच्चों में निश्चय रखते हैं। बहुत अच्छा और बढ़ते चलो, उड़ते चलो। जो ओटे वो अव्वल नम्बर अर्जुन। बाप तो सबको अव्वल नम्बर ही देखता है। सेकण्ड थर्ड तो नहीं आना है ना कि चलो, पर उपकार करते हैं, उसको पहला नम्बर देते हैं। ऐसा तो नहीं सोचते?

पश्चाताप

पुरुषार्थ में रेस भले करो, और बातों में रेस नहीं करो। तो सिर्फ पूज्य नहीं परम पूज्य आत्मायें हैं - यह सदा स्मृति में रहे।

देखना यहाँ पूज्य कहकर जाओ और वहाँ खण्डित हो जाओ। फिर कहो कि ठोकर लगी तो खण्डित हो गये। कितना भी कोई ठोकर लगाये लेकिन खण्डित नहीं हो। चाहे कितना भी बड़ा मोटा हेमर लगाये लेकिन खण्डित नहीं होना। तो पक्का याद रखेंगे ना। देखेंगे रिजल्ट। अच्छा!

10.01.1994

सदा याद और सेवा दोनों का बैलेन्स रखने वाले हो? क्योंकि याद से जो शक्तियों की वा गुणों की प्राप्ति होती है वो सेवा द्वारा औरों को देना है। तो दोनों ही अच्छी तरह से चेक करते हो?

18.01.1994

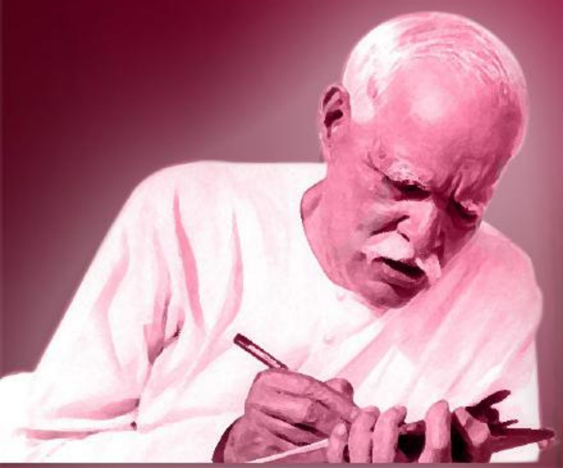

पश्चाताप

कि कभी सेवा ज्यादा होती तो योग कम, कभी योग ज्यादा तो सेवा कम-ऐसे तो नहीं होता? सेवा करने से, जो खजाने मिले हुए हैं वह बढ़ते हैं, तो बढ़ाने की विधि आती है ना? तो सेवा में होशियार हो या याद में होशियार हो? याद की शक्ति का अर्थ है कि जहाँ बुद्धि को लगाना चाहो, वहाँ लग जाये। ऐसी शक्ति है? जब चाहो, जहाँ चाहो, अपने बुद्धि को लगा सकते हो या टाइम लगेगा? कितने टाइम में लगा सकते हो?

कोई भी वायुमण्डल है लेकिन कैसे भी वायुमण्डल के बीच अपने मन को, बुद्धि को कितने समय में एकाग्र कर सकते हो? (सेकण्ड में) कहते हो या करते हो?

18.01.1994

पश्चाताप

कहना तो सहज है लेकिन एकाग्रता की शक्ति है वा नहीं है–वह समय पर मालूम पड़ता है। परिस्थिति हलचल की हो, वायुमण्डल तमोगुणी हो, माया अपने हिम्मत से अपना बनाने का प्रयत्न कर रही हो फिर सेकण्ड में एकाग्र हो सकते हो या टाइम लगेगा? ये

ये अभ्यास सदा करते रहो तो समय पर शक्ति कार्य में ला सकते हो। इसको कहा जाता है जब चाहे, जहाँ चाहे वहाँ स्थित हो सकते हैं।

कितना भी व्यर्थ संकल्पों का तूफान हो लेकिन सेकण्ड में तूफान आगे बढ़ने का तोहफा बन जाये। ऐसी कन्ट्रोलिंग पॉवर हो तो ऐसी शक्तिशाली आत्मा कभी ये संकल्प भी नहीं लायेगी कि चाहते तो नहीं, लेकिन हो जाता है।

जो सोचा वो हुआ। ऐसे नहीं, सोचते हैं नहीं होना चाहिये और हो जाये।

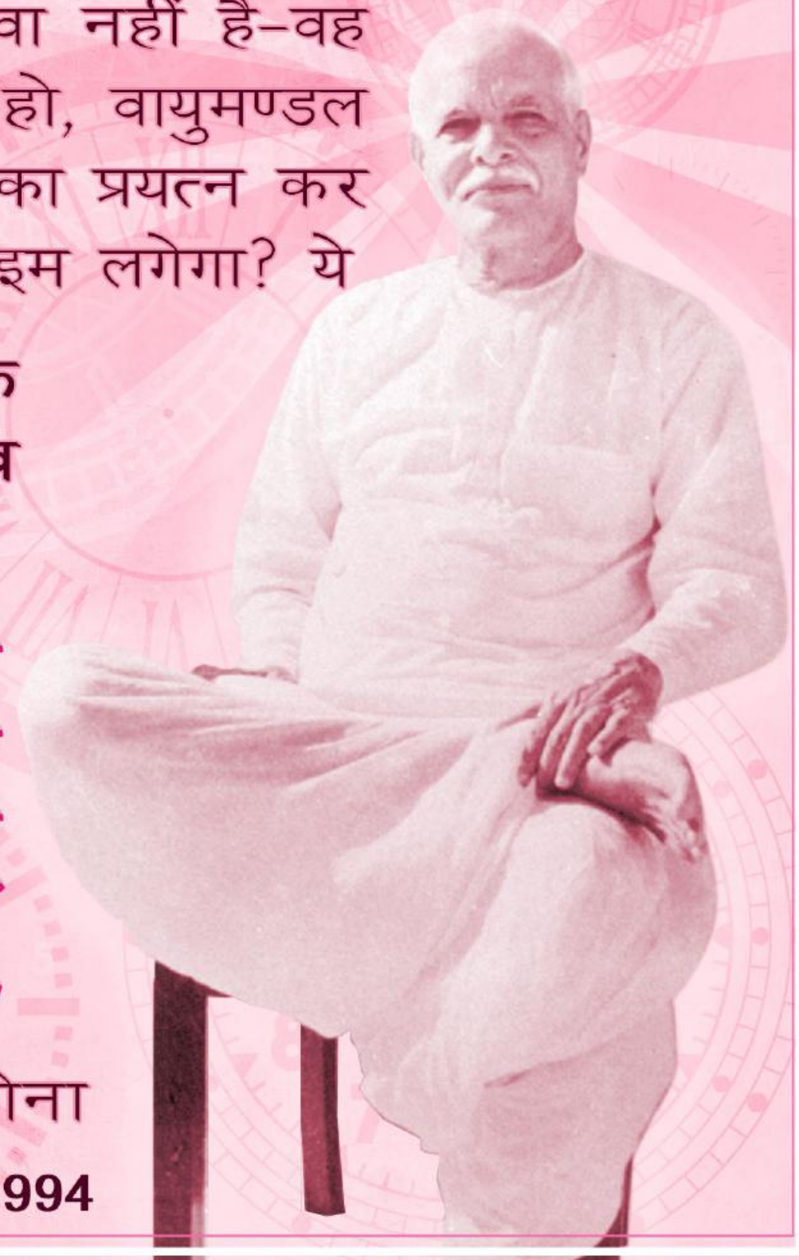

18.01.1994

पश्चाताप

क्योंकि अगर समय पर कोई भी शक्ति काम में नहीं आ तो प्राप्ति के बजाय पश्चाताप करना पड़ता है। तो प्राप्ति स्वरूप बनो। बापदादा ने सभी आत्माओं को सर्व शक्तियाँ वर्से में दे दी। तो वर्से वाली चीज सदा याद रहती है। फलक से कहेंगे ना कि ये शक्तियाँ हमारा जन्म-सिद्ध अधिकार हैं।

18-01-1994

जितना अभी बाप और ब्राह्मण आत्माओं की दुआओं के पात्र बनेंगे उतना ही राज्य के पात्र बनेंगे। अगर अभी ब्राह्मण परिवार को सन्तुष्ट नहीं कर सकते, तो राज्य क्या चलायेंगे! राज्य को क्या सन्तुष्ट करेंगे!

क्योंकि ब्राह्मण आत्मायें आपकी रॉयल फैमिली बनेंगे तो जो फैमिली को सन्तुष्ट नहीं कर सकते वो प्रजा को क्या करेंगे?

19-01-1995

पश्चाताप

संस्कार तो यहाँ भरना है ना कि वहाँ योग करके भरेंगे। यहाँ ही भरना है। अगर वर्तमान ब्राह्मण परिवार में कारण का निवारण नहीं कर सकते, कारण कारण ही कहते रहते हैं, **तो जहाँ कारण है वहाँ निवारण शक्ति नहीं है।**

अगर परिवार में निवारण शक्ति नहीं तो विश्व के राज्य को क्या निवारण करेंगे! क्योंकि आपके राज्य में हर आत्मा सदा निवारण स्वरूप है।

वहाँ कारण होंगे क्या? जैसे अभी राज्य सभा में कारण बताते हैं – ये कारण है, ये कारण है, ये कारण है. वहाँ ऐसे राज्य दरबार होगी क्या? वहाँ तो सिर्फ खुश खैराफत पूछेगे। सिर्फ दरबार नहीं है लेकिन बहुत अच्छा मिलन है। **तो कारण कहकर अपने को दुआओं से वंचित नहीं करो। ब्रह्मा बाप ने कारण को निवारण किया इसीलिये नम्बरवन हुआ।** बापदादा के पास सभी के कारणों के फाइल ही इकट्ठे होते हैं।

19.01.1995

पश्चाताप

सभी के फाइल हैं किसका छोटा, किसका बडा फाइल है। तो अभी भी फाइलें रखनी है, फाइल बढाते रहना है या रिफाइन होना है?

तो आज से फाइल सब खत्म कर दें? फिर दूसरा नया फाइल तो नहीं रखना पड़ेगा। अगर नया फाइल रखा तो फाइन पड़ेगा। सोच लो! बोलो–खत्म करें कि थोड़ा दिन रखें?

शिव रात्रि तक रखें। जो समझते हैं शिवरात्रि तक थोडी मार्जिन मिलनी चाहिये, तब तक पुरुषार्थ करके रिफाइन हो जायेंगे, वो हाथ उठाओ। अच्छा है, हिम्मत रखना भी अच्छी बात है। लेकिन सिर्फ अभी हिम्मत नहीं रखना।

19.01.1995

पश्चाताप

19.01.1995

ऐसे तो नहीं बापदादा के सामने थे तो हिम्मत थी, नीचे उतरे तो थोड़ी हिम्मत कम हो गई और अपने देशों में गये तो और कम हो गई। कोई बात आई तो और कम हो गई। ऐसे तो नहीं करेंगे? **देखो जब कोई भी कारण सामने आता है और कारण के कारण हिम्मत कम होती है, कमजोरी आती है और जब वो बात समाप्त हो जाती है तो अपने ऊपर शर्म आती है ना! अपने ऊपर ही संकोच होता है कि ये अच्छा नहीं किया, ये अच्छा नहीं हुआ।** करके और फिर पचाताप करे. ये तो आपकी प्रजा का काम है या आपका है? पश्चाताप वाले क्या राजा बनेंगे?

तो सेची साक्षी स्थिति के सिंहासन पर बैठ जाओ और अपने आपको ही जज करो। अपना जज बनना, दूसरे का जज नहीं बनना। दूसरे का जज बनना सभी को आता है, दूसरे का जज बहुत जल्दी बन जाते हैं और अपना वकील बन जाते हैं।

पश्चाताप

तो साक्षीपन के सिंहासन पर अपने आपका निर्णय बहुत अच्छा होगा। सिंहासन के नीचे रहकर जज करते हो तो निर्णय अच्छा नहीं होता। सेकण्ड में तख्तनशीन बन जाओ। ये स्थिति आपका तख्त है। यथार्थ सहज निर्णय का तख्त ये साक्षीपन की स्थिति है।

साक्षी नहीं होते हैं तो दूसरे की बात, दूसरे की चलन वो ज्यादा सामने आती है, अपनी नहीं आती। अगर साक्षी होकर देखेंगे तो अपनी भी नजर आयेगी, दूसरे की भी नजर आयेगी। फिर जजमेन्ट जो होगी वो यथार्थ होगी, नहीं तो यथार्थ नहीं होती।

19.01.1995

अपने संकल्पों के ऊपर कन्ट्रोलिंग पह्वर रखी। ये नहीं कहो-चाहते तो नहीं थे, समझते तो हैं लेकिन क्या करें हो जाता है।

18.01.1994

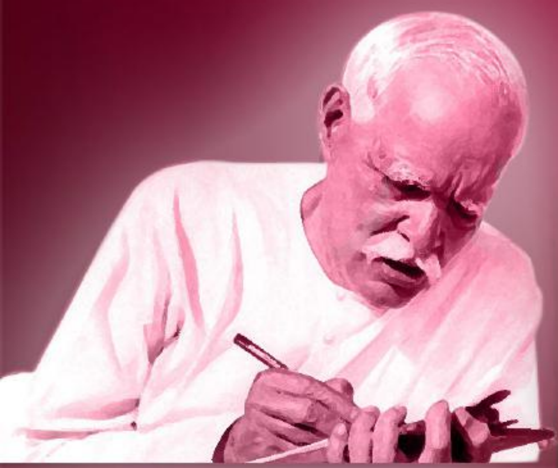

पश्चाताप

अगर मालिक को भी कोई धोखा दे दे तो वो मालिक है क्या? तो ये चेक करो-कन्ट्रोलिंग पहृवर है? एक तो बचत करो, वेस्ट के बजाय बेस्ट के खाते में जमा करो और दूसरा अगर बचत नहीं कर सकते हो तो व्यर्थ को समर्थ संकल्पों में परिवर्तन करो। यदि कन्ट्रोल नहीं हो सकता है तो परिवर्तन तो कर सकते हो ना? उसकी रफ्तार को जल्दी से चेज करना। नहीं तो आदत पड़ जाती है। एक घण्टे को भी चेक करो तो एक घण्टे में भी देखेंगे कि ५-१० मिनट भी जो वेस्ट संकल्प जा रहे थे, वह ५ मिनट भी वेस्ट से बेस्ट में जमा हो गये तो १२ घण्टे में ५-५ मिनट भी कितने हो जायेंगे?

और खुशी कितनी होगी? और जितना श्रेष्ठ संकल्पों का खाता जमा होगा तो समय पर जमा का खाता काम में आयेगा।

25.03.1995

पश्चाताप

नहीं तो जैसे स्थूल धन में अगर जमा नहीं होता तो समय पर धोखा खा लेते हैं। ऐसे यहाँ भी जब कोई बड़ी परीक्षा आ जाती है तो मन और बुद्धि खाली-खाली लगती है, शक्ति नहीं लगती है। तो क्या करना है? जमा करना सीखो। अगले वर्ष अगर देखें तो सबके श्रेष्ठ संकल्पों का खाता भरपूर हो। खाली-खाली नहीं हो।

यही श्रेष्ठ संकल्पों का खजाना श्रेष्ठ प्राप्लब्ध का आधार बनेगा। तो जमा करना आता है? राजयोगी अर्थात् चेक करना भी आता और जमा करना भी आता।

जिसका खाता जमा होगा उसकी चलन और चेहरा सदा ही भरपूर दिखाई देगा।

ऐसे नहीं, आज देखो तो चेहरा बड़ा चमक रहा है और कल देखो तो उदासी की लहर-ऐसा नहीं होगा। सारे दिन में चेक करो तो आपके पोज कितने बदलते हैं? कभी चेक किया है?

25.03.1995

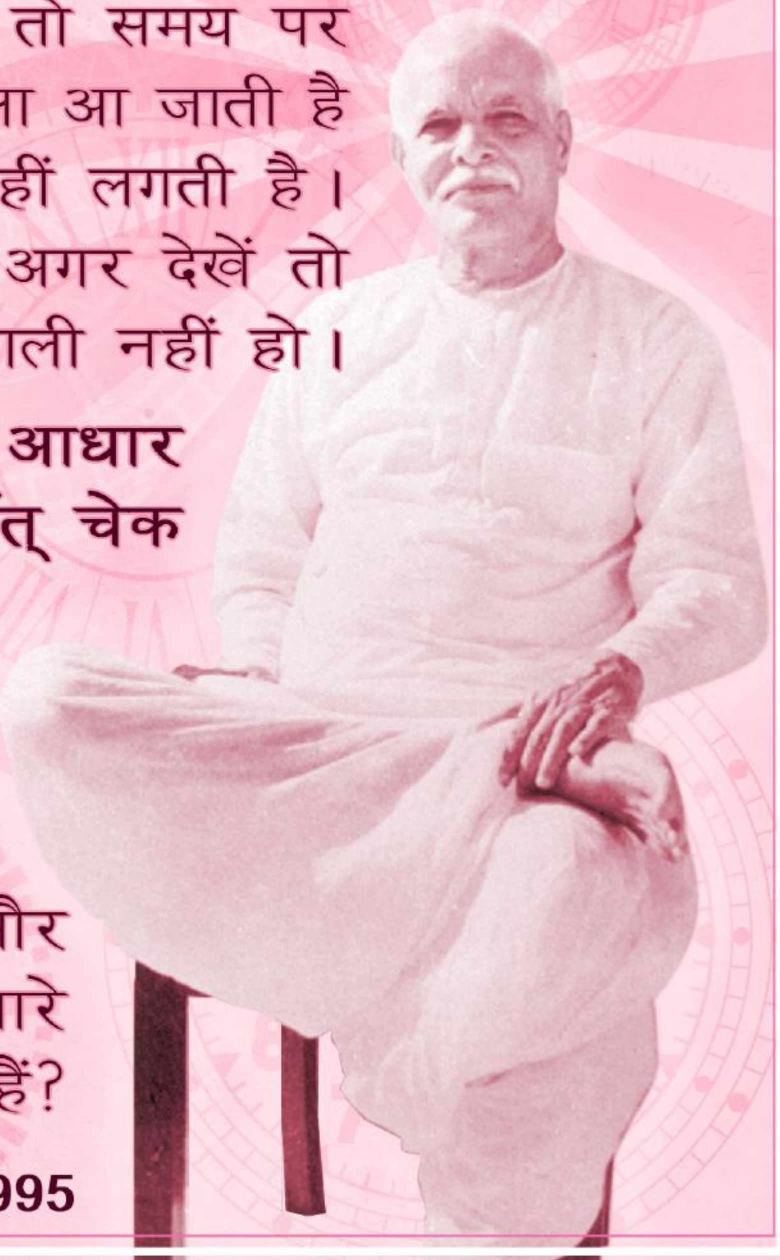

पश्चाताप

बहुत पोज बदलते हैं। बापदादा तो सबके पोज देखते हैं ना। कभी–कभी देखते हैं कि कई बच्चे कर्म करने में इतना टाइम नहीं लगाते लेकिन किये हुए कर्म के पश्चाताप में टाइम बहुत गवाते हैं। फिर कहते हैं तीन दिन हो गये, खुशी गुम हो गई है। क्यों खुशी गुम हुई, कहाँ गई, कौन ले गया? खजाना तो आपका है लेकिन ले कौन गया? पश्चाताप करना नहीं लगाओ। पश्चाताप का रोना करेंगे तो सारा सप्ताह रोते रहेंगे।

पश्चाताप किया, बहुत अच्छा–लेकिन पचाताप करना और प्राप्ति की खुशी लाना। आगे के लिये सेकण्ड में निर्णय करो कि ये करना है या ये नहीं करना है।

पहले सुनाया है ना–नॉट और डॉट ये दोनों शब्द याद रखो।

25-03-1995

पश्चाताप

नॉट सोचा और डॉट लगाया। चार घण्टा रोते रहे, चलो पानी नहीं आया, अन्दर रोते रहे। आधा घण्टा पानी बहाया और चार घण्टा मन से रोया तो इतना पचाताप नहीं करो। यह बहुत है।

पश्चाताप की भी कोई हद रखो।

25.03.1995

मुख्य बात – जो यथार्थ निश्चय है उसको पक्का करो। कहने में तो कह देते हो मैं आत्मा हूँ और बाप सर्वशक्तिमान् है लेकिन प्रैक्टिकल में, कर्म में आना चाहिये। बाप सर्वशक्तिमान् है लेकिन मेरे को माया हिला रही है तो कौन मानेगा आपका बाप सर्वशक्तिमान् है क्योंकि उससे ऊपर तो कोई है नहीं तो बापदादा आज निश्चय के फाउण्डेशन को देख रहे हैं।

04.12.1995

पश्चाताप

चाहे नये हैं, चाहे पुराने हैं लेकिन इस निश्चय के फाउण्डेशन को प्रैक्टिकल में लाओ और समय पर यूज़ करो। समय बीत जाता है फिर बाप के आगे पश्चाताप के रूप में आते हो-क्या करें, बाबा हो गया, आप तो रहमदिल हो, रहम कर दो तो ये क्या हुआ? ये भी रॉयल पश्चाताप है। साथ है तो किसी की हिम्मत नहीं है, निश्चयबुद्धि का अर्थ ही है विजयी।

अगर कोई हिसाब-किताब आता भी है तो मन को नहीं हिलाओ। स्थिति को नीचे-ऊपर नहीं करो। चलो आया और फट से उसको दूर से ही खत्म कर दो।

04.12.1995

पश्चाताप

अभी योद्धे नहीं बनी। कई अभी निरन्तर योगी नहीं हैं। कुछ समय योगी हैं और कुछ समय युद्ध करने वाले योद्धे हैं। लेकिन अपने को कहलाते क्या हो? योद्धे कि योगी? कहलाते तो सहजयोगी हो। तो नये जो भी आये हैं उनको बापदादा फिर से भाग्य प्राप्त करने की मुबारक देते हैं। **लेकिन मुबारक के साथ ये चेक भी करना कि फाउण्डेशन नम्बर वन है या नम्बर दो का है?**

04.12.1995

बापदादा ने सबका चार्ट चेक किया तो टोटल 50 परसेन्ट बच्चे दूसरों को देख स्वयं अलबेले रहते हैं। **कहाँ–कहाँ अच्छे–अच्छे बच्चे भी अलबेलेपन में बहुत आते हैं।** ये तो .होता ही है. ये तो चलता ही है चलने दो सभी चलते हैं।

बापदादा को हंसी आती है कि क्या अगर एक ने ठोकर खाई तो उसको देखकर आप अलबेलेपन में आकर ठोकर खाते हो, ये समझदारी है ?

31.12.1995

पश्चाताप

तो इस अलबेलेपन का पचाताप बहुत-बहुत-बहुत बड़ा है। अभी बड़ी बात नहीं लगती है, हाँ चलो. लेकिन बा. पदादा सब देखते हैं कि कितने अलबेले होते हैं, कितने औरों को नीचे जाने में फालो करते हैं?

तो बापदादा को बहुत रहम आता है कि पश्चाताप की घडियाँ कितनी कठिन होगी।

इसलिए अलबेलेपन की लहर को, दूसरों को देखने की लहर को इस पुराने वर्ष में मन से विदाई दो। **जब थोड़ा उमंग-उत्साह आता है ना तो थोड़े समय के लिए वैराग्य आता है लेकिन वो अल्पकाल का वैराग्य होता है।** इसलिए जो बापदादा ने मुक्त होने की बातें सुनाई हैं, उसके ऊपर बहुत अटेन्शन देना।

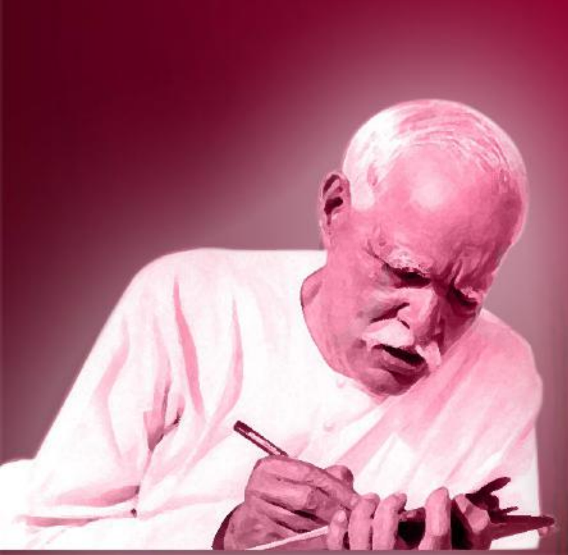

31.12.1995

पश्चाताप

जितने पुराने होते हैं ना तो देखा गया है कि पुरानों में अलबेलापन ज्यादा आता है। जो पहले-पहले का जोश, उमंग होता है, वो नहीं होता है। पढ़ा का भी अलबेलापन आ जाता है, सब सुन लिया, समझ लिया। सोचो, अगर समझ पश्चाताप लिया, सोच लिया तो बापदादा पढ़ाई पूरी कर देते। जब स्टूडेन्ट पढ़ चुके तो फिर क्यों पढ़ाई पढ़ाये? फिर तो समाप्त कर दें ना। लेकिन इस अलबेलेपन को अच्छी तरह से विदाई दो। **औरों को नहीं देखो। बाप को देखो। ब्रह्मा बाप को देखो।**

अगर कोई ठोकर खाता है तो महारथी का काम है ठोकर से बचाना, न कि खुद फालो करना।

31.12.1995

पश्चाताप

तो पुराने वर्ष को अच्छी तरह से विदाई देंगे ना? अभी कितना बजा है? पौने दस। अच्छा! तो अभी दो घण्टे हैं, दो घण्टे में विदाई का सामान तैयार कर दो। बापदादा देखेंगे कि बाप को गिफ्ट देने में ज्यादा नम्बर डबल विदेशी लेते हैं या भारत वाले लेते हैं? दोनों लेंगे ना? हाँ या ना बोलो।

31.12.1995

बाप ने सुनाया था कि कई बच्चे तो माया को चाय-पानी भी पिलाते हैं। चाय-पानी कौन सी पिलाते हो? पता है ना? क्या करूं, कैसे करूं, अभी तो पुरुषार्थी हूँ अभी तो सम्पूर्ण नहीं बने हैं, आखिर हो जायेंगे - ये संकल्प चाय-पानी हैं। तो वो देखती है चाय-पानी तो मिलती है। किसी को भी अगर चाय-पानी पिलाओ तो वो जायेगा कि बैठ जायेगा?

तो जब भी कोई परिस्थिति आती है तो क्यों, क्या, कैसे, कभी-कभी तो होता ही है, अभी कौन पास हुआ है, सबके पास है - ये है माया की खातिरी करना।

16.02.1996

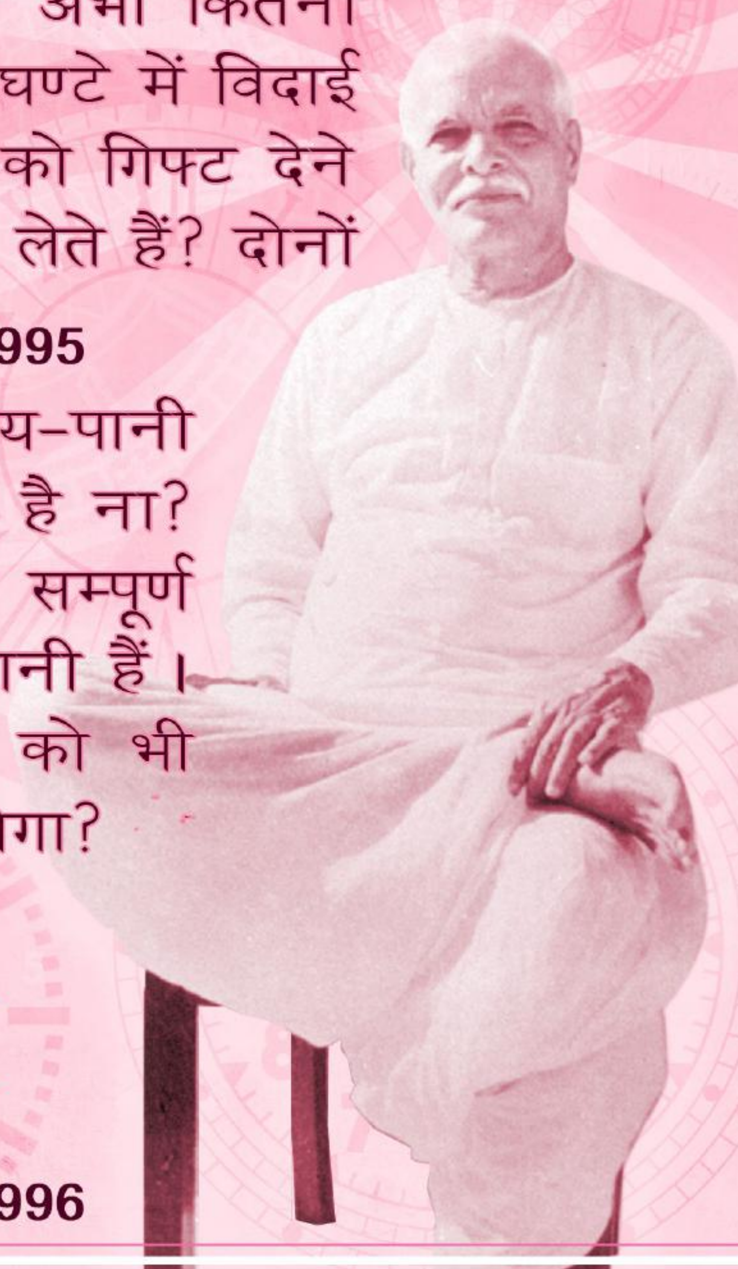

पश्चाताप

कुछ नमकीन, कुछ मीठा भी खिला देते हो। और फिर क्या करते हो? फिर तंग होकर कहते ही अभी बाबा आप ही भगाओ। आने आप देते हो और भगाये बाबा, क्यों? आने क्यों देते हो? माया बार-बार क्यों आती है? हर समय, हर कर्म करते, त्रिकालदर्शी की सीट पर सेट नहीं होते हो। **त्रिकालदर्शी अर्थात् पास्ट, प्रेजेन्ट और फ्युचर को जानने वाले। तो क्यों, क्या नहीं करना पड़ेगा।**

त्रिकालदर्शी होने के कारण पहले से ही जान लेंगे कि ये बातें तो आनी हैं, होनी हैं, चाहे स्वयं द्वारा, चाहे औरों द्वारा, चाहे माया द्वारा, चाहे प्रकृति द्वारा, सब प्रकार से परिस्थितियाँ तो आयेंगी, आनी ही हैं। लेकिन स्व-स्थिति शक्तिशाली है तो पर-स्थिति उसके आगे कुछ भी नहीं है।

16-02-1996

पश्चाताप

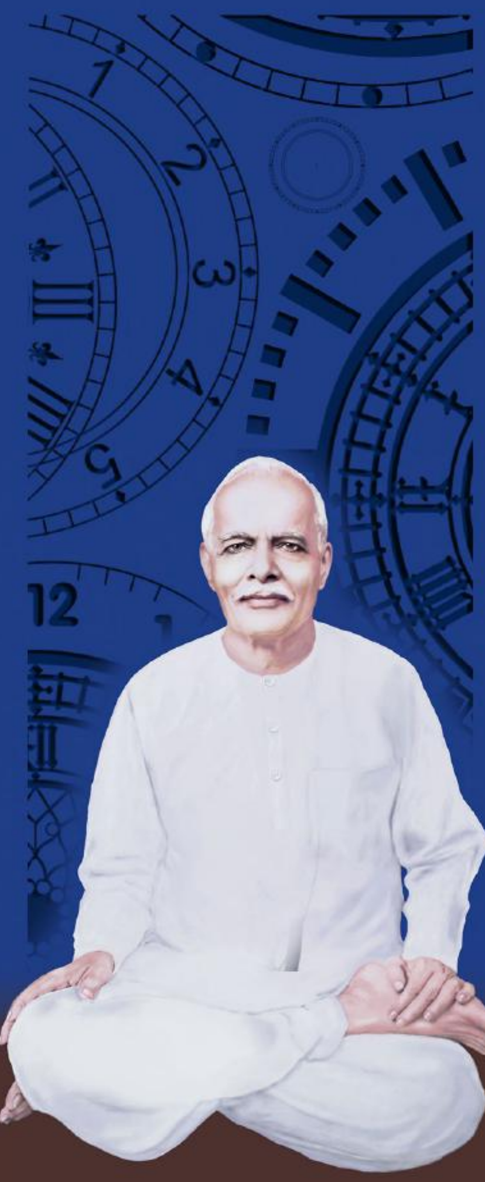

पर–स्थिति बड़ी या स्व–स्थिति बड़ी? या कभी स्व–स्थिति बड़ी हो जाती, कभी पर–स्थिति? तो सका साधन है – एक तो आदि–मध्य–अन्त तीनों काल चेक करके, समझ कर फिर कुछ भी करो। सिर्फ वर्तमान नहीं देखो। सिर्फ वर्तमान देखते हो तो कभी परिस्थिति ऊंची हो जाती और कभी स्व–स्थिति ऊंची हो जाती। दुनिया में भी कहते हैं पहले सोचो फिर करो। नहीं तो जो सोच कर नहीं करते तो पीछे सोचना पश्चाताप का रूप हो जाता है।

ऐसे नहीं करते, ऐसे करते, तो पीछे सोचना अर्थात् पश्चाताप का रूप और पहले सोचना ये ज्ञानी तू आत्मा का गुण है।

द्वापर–कलियुग में तो अनेक प्रकार के पश्चाताप ही करते रहे हो ना! लेकिन अब संगम पर पश्चाताप करना अर्थात् ज्ञानी तू आत्मा नहीं है।

16.02.1996

पश्चाताप

ऐसा अपने को बनाओ जो अपने आपमें भी, मन में एक सेकण्ड भी पश्चाताप नहीं हो।

16.02.1996

डबल विदेशियों से पूछ रहे हैं कि सभी ने इस वर्ष जो सेवा की, जो प्रोजेक्ट मिला, उसमें सन्तुष्ट रहे? सभी ने प्रोग्राम किया ना? तो सन्तुष्ट हैं? हाँ या ना? कुछ भी सेवा करो चाहे जिज्ञासू कोर्स वाले आवे या नहीं आवे लेकिन स्वयं, स्वयं से सन्तुष्ट रहो। निश्चय रखो कि अगर मैं सन्तुष्ट हूँ तो आज नहीं तो कल यह मैसेज काम करेगा, करना ही है। इसमें थोडा सा उदास नहीं बनो।

27.02.1996

पश्चाताप

27.02.1996

खर्चा तो किया. प्रोग्राम भी किया लेकिन आया कोई नहीं। स्टूडेन्ट नहीं बढ़े, कोई हर्जा नहीं आपने तो किया ना। आपके हिसाब–किताब में जमा हो गया और उन्हों को भी सन्देश मिल गया। तो टाइम पर सभी को आना ही है, इसलिए करते जाओ। खर्चा बहुत हुआ, उसको नहीं सोची। अगर स्वयं सन्तुष्ट हो तो खर्चा सफल हुआ। घबराओ नहीं, पता नहीं क्या हुआ! **कई बच्चे ऐसे कहते हैं मेरा योग ठीक नहीं था, तभी यह हुआ। किससे योग था? और कोई है क्या जिससे योग था? योग है और सदा रहेगा। बाकी कोई सीजन का फल है, कोई हर समय का फल है। तो अगर आया नहीं तो सीजन का फल है, सीजन आयेगी।**

दिलशिकस्त नहीं बनो। क्योंकि श्रीमत को तो माना ना। श्रीमत प्रमाण कार्य किया। इसीलिए श्रीमत को मानना यह भी एक सफलता है। बढ़ते जाओ, करते जाओ।

पश्चाताप

और ही पश्चाताप करके आपके पांव पड़ेगे कि आपने कहा हमने नहीं माना।

यहाँ ही आप देवियां बनेंगी। आपके पांव पर पडेगे, तभी तो भक्ति में भी पांव पडेगे ना।

तो वह टाइम भी आना है जो सब आपके पांव पड़ेगे कि आपने कितना अच्छा हमारा कल्याण किया।

27.02.1996

तेरा कहना माना बड़ी बात को छोटा करना और मेरा कहना माना छोटी बात को बड़ी करना। क्या भी हो जाए, १०० हिमालय से भी बड़ी समस्या आ जाए लेकिन तेरा कहना और पहाड़ को रूई बनाना, राई भी नहीं, रुई। जो रूई सेकण में उड़ जाए।

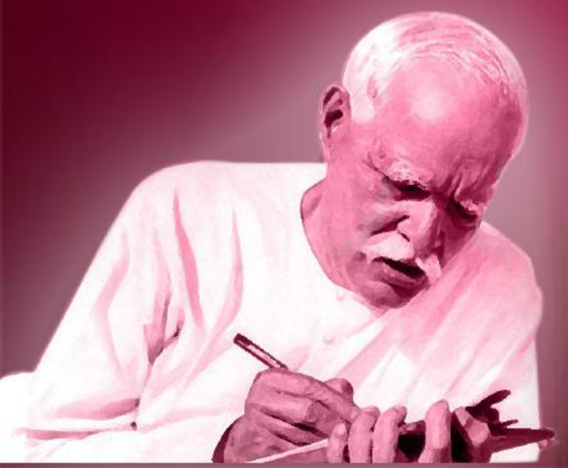

13.03.1998

पश्चाताप

सिर्फ तेरा कहना नहीं मानना, सिर्फ मानना भी नहीं चलना। एक शब्द का परिवर्तन सहज ही है ना! और फायदा ही है, नुकसान तो है नहीं। तेरा कहने से सारा बोझ बाप को दे दिया। तेरा तुम ही जानों। आप सिर्फ निमित-मात्र हो। इसमें फायदा है ना? न्यारे और परमात्मा के प्यारे बन गये।

जो परमात्मा के प्यारे बनते हैं वह विश्व के प्यारे बनते हैं। सिर्फ भविष्य प्राप्ति नहीं है, वर्तमान भी है।

एक सेकण्ड में अनुभव किया भी है और करके देखो। कोई भी बात आ जाए तेरा कह दो, मान जाओ और तेरा समझकर करो तो देखो बोझ हल्का होता है या नहीं होता है।

13.03.1998

पश्चाताप

अनुभव है ना? सभी अनुभवी बैठे हो ना सिर्फ क्या होता है, मेरा मेरा कहने की बहुत आदत है ना, ६३ जन्मों की आदत है तो तेरा तेरा कहकर फिर मेरा कह देते हो और मेरा माना गये, फिर वह बात तो एक घण्टे में, दो घण्टे में, एक दिन में खत्म हो जाती है लेकिन जो तेरे से मेरा किया उसका फल लम्बा चलता है।

बात आधे घण्टे की होगी लेकिन चाहे पश्चाताप के रूप में, चाहे परिवर्तन करने के लक्ष्य से, वह बात बार-बार स्मृति में आती रहती है।

इसलिए बाप सभी बच्चों को कहते हैं अगर ‘मेरा शब्द से प्यार है, आदत है, संस्कार है, कहना ही है तो मेरा बाबा कहो। आदत से मजबूर होते हैं ना तो जब भी मेरा–मेरा आवे तो मेरा बाबा कहकर खत्म कर दी। अनेक मेरे को एक मेरा बाबा में समा दो।

13.03.1998

पश्चाताप

दादियों से रूह रूहान– चक्रवर्ती के संस्कार ज्यादा हैं। चक्रवर्ती बनके चक्कर लगाना अच्छा लगता है। (बाबा को सब देखें ना) देखना ही है। ***सिर्फ बच्चे थोड़े से एवररेडी हो जाय ना। एवरी टाइम एवररेडी, तो ठीक हो जायगा। देखेंगे, बोलेगे भी। अहो प्रभू तो बोलेंगे। लेकिन खुशी से नहीं पश्चाताप के रूप में।***

17-02-2004

साइलेन्स की शक्ति जितना जमा कर सको, एक सेकण्ड में स्वीट साइलेन्स की अनुभूति में खो जाओ क्योंकि साइन्स और साइलेन्स, साइंस भी अति में जा रही है। तो साइंस पर साइलेन्स के शक्ति की विजय परिवर्तन करेगी।

05-03-2008

पश्चाताप

साइलेन्स की शक्ति से दूर बैठे किस आत्मा को सहयोग भी दे सकते हो सकाश दे सकते हो। भटका हुआ मन शान्त कर सकते हो।

ब्रह्मा बाबा को देखा जब भी कोई अनन्य बच्चा थोड़ा हलचल में वा शारीरिक हिसाब–किताब में रहा तो सवेरेसवेरे उठकर बच्चे को साइलेन्स के शक्ति की सकाश दिया और वह अनुभव करते थे। तो अन्त में इस साइलेन्स की सेवा का सहयोग देना पड़ेगा। सरकमस्टांश अनुसार यह बहुत ध्यान में रखो, साइलेन्स की शक्ति या अपने श्रेष्ठ कर्मों की शक्ति जमा करने की बैंक सिर्फ अभी खुलती है और कोई जन्म में जमा करने की बैंक नहीं है। अभी अगर जमा नहीं किया फिर बैंक ही नहीं होगी तो किसमें जमा करेंगे! **इसलिए जमा की शक्ति को जितना इकट्ठा करने चाहो उतना कर सकते हो।**

05.03.2008

पश्चाताप

वैसे लोग भी कहते हैं जो करना है वह अब कर लो। जो सोचना है अब सोच लो। अभी जो भी सोचेंगे वह सोच, सोच रहेगा और कुछ समय के बाद जब समय की सीमा नजदीक आयेगी तो सोच पश्चाताप के रूप में बदल जायेगा। यह करते थे, यह करना था तो सोच नहीं रहेगा, पश्चाताप में बदल जायेगा।

इसीलिए बापदादा पहले से ही इशारा दे रहा है। साइलेन्स की शक्ति, एक सेकण्ड में कुछ भी हो, साइलेन्स में खो जाओ। यह नहीं पुरुषार्थ कर रहे हैं। जमा का पुरुषार्थ अभी कर सकते हो।

05.03.2008